सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 15 • अंक : 1 • 5 अप्रेल 2019 • मूल्य : 20 रु.

परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

को

जन्म दिवस पर
हार्दिक अभिनंदन...
वर्धापना...

वंदनकर्त्ता

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ भैरव
मंदिर ट्रस्ट, बिजयनगर

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. का 59 वां जन्मोत्सव की झलकियाँ

सुदीर्घ कविता को गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रेकार्ड में स्थान

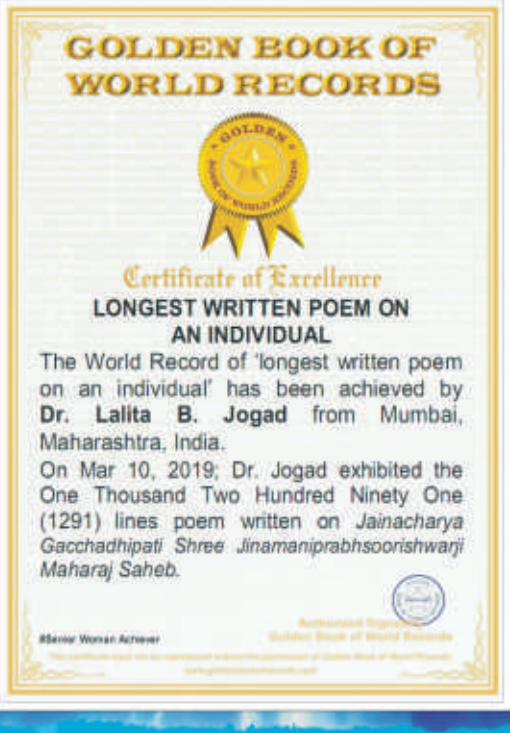
GOLDEN BOOK OF WORLD RECORDS

Certificate of Excellence

LONGEST WRITTEN POEM ON AN INDIVIDUAL

The World Record of 'longest written poem on an individual' has been achieved by **Dr. Lalita B. Jogad** from Mumbai, Maharashtra, India.

On Mar 10, 2019; Dr. Jogad exhibited the One Thousand Two Hundred Ninety One (1291) lines poem written on *Jainacharya Gacchadhipati Shree Jinamaniprabhsoorishwarji Maharaj Saheb.*

#Senior Woman Achiever

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

अप्पा चेव दमेयव्वो अप्पा हु खलु दुद्दमो।
अप्पा दंतो सुही होई अस्सिं लोए परत्थ य॥

अपनी आत्मा का ही दमन करना चाहिए, क्योंकि आत्मा ही दुर्दम्य है। अपनी आत्मा पर विजय पानेवाला ही इस लोक और परलोक में सुखी होता है।

The Self alone should be restrained, because it is most difficult to restrain the self. He who has restrained his self becomes happy in this world as well as in the next world.

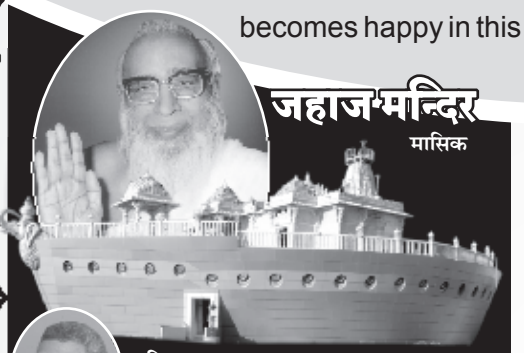

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 अंक : 1 5 अप्रेल 2019 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. सोलह सतियाँ कथानक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	05
3. परमात्मा महावीर से सीखे	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	07
4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	11
5. अधूरा सपना	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	12
6. जीवन जीत गये...	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	14
7. गौत्र का इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	17
8. जन-जन को जिन पर नाज...	साध्वी विश्वज्योतिश्रीजी म.	18
9. गुरु जन्म बधाई गीत	साध्वी विरागज्योतिश्रीजी म.	18
10. गुरु जन्मोत्सव पर काव्यांजलि	साध्वी सम्यगदर्शनाश्रीजी म.	19
11. फागुन सुद चौदस (कविता)	प्रवर्तिनी शशिप्रभाश्रीजी म.	20
12. गुरुवर का जन्मदिन (गीत)	साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.	20
13. अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ प्रतिष्ठा कवित्त	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	21
14. खरतरगच्छाचार्यों के उपकरों के प्रति कृतज्ञता	प्रतापमल सेठिया	22
14. समाचार दर्शन		23
15. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	50

पूज्य गच्छाधिपतिश्री की निश्रा में आगामी शासन-प्रभावक कार्य

- दि. 3 मई 2019 को जिनमन्दिर प्रतिष्ठा, निमगुल
- दि. 7 मई 2019 को वर्षीतप पारणोत्सव, नंदुरबार
- दि. 10 मई 2019 को मुमुक्षु विक्की कोचर का दीक्षा महोत्सव, नंदुरबार
- दि. 11 जुलाई 2019 को चातुर्मास प्रवेश, धूले

विज्ञापन हेतु हमारे प्रचार मंत्री कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई से संपर्क करावें। मो. 094447 11097

नवप्रभात

विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। कक्षा में मनोविज्ञान के अध्यापक अपना वक्तव्य दे रहे थे।

एक प्रश्न पूछा–

Why trees are green?

पेड़ हरे क्यों है?

विद्यार्थी ने बहुत सोच समझ कर उत्तर दिया–

Because they are evergreen.

क्योंकि पेड़ हमेशा सदाबहार रहते हैं।

विद्यार्थी का उत्तर बहुत गहरा था। यह उत्तर केवल पेड से संबंधित नहीं है। पेड के माध्यम से पूरी सृष्टि को दिया गया संदेश है। इस में जीवन का एक संदेश छिपा है। जो हमेशा सदाबहार अर्थात् प्रसन्न रहता है, वह सदा हरा–भरा रहता है।

जीवन में प्रतिकूलता कदम–कदम पर उपस्थित होती है।

ऐसा व्यक्ति मिलना असंभव है, जिसके जीवन में सदा–सदा सुख व आनंद का साम्राज्य ही छाया रहता हो।

प्रकृति की यह सहज व्यवस्था है–

छांव के बाद धूप आती ही है।

दिन के बाद रात आती ही है।

शुक्ल पक्ष की रोशनी के बाद कृष्ण पक्ष का अंधेरा आता ही है।

अनुकूल–प्रतिकूल समस्त परिस्थितियों में सदाबहार रहने का मानस ही व्यक्ति को सदाबहार रख सकता है। उसे कभी भी कोई दुखी नहीं कर सकता।

जिसे हर परिस्थिति को सकारात्मक सोच के कारण अपने अनुकूल बनाना आता हो, हार शब्द उसके शब्दकोष में नहीं हो सकता।

अंग्रेज लेखक के ये दो शब्द जीवन का महत्वपूर्ण अध्याय है–

if you want to go heaven then first heaven should be in your heart.

यदि तुम स्वर्ग पाना चाहते हो तो सबसे पहले अपने हृदय में स्वर्ग का निर्माण करो।

हृदय को समता से भरना... सकारात्मक विचारों से भरना... उदारता और सहजता से भरना... दूसरों की भूलों को भूल जाने के स्वभाव से भरना... यही तो अपने हृदय को स्वर्ग बनाना है।

सोलह सतियाँ
कथानक
10

विलक्षण वैराग्यवती सती पद्मावती

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

(गतांक से आगे)

अरे! तुम्हारी मुखमुद्रा यों उदासी से भरी-भरी कैसे? हमेशा गुलाब की तरह खिले खिले रहने वाले चेहरे पर तनाव की ये लकीरें कैसी?

कैसी उदासी....कैसा तनाव। साश्चर्य पद्मावती बोली। दधिवाहन ने पद्मावती का हाथ खींचकर अपने पास बिठाते हुए कहा-प्रिये! क्या मैं इतना नादान हूँ कि तेरी अन्तर्व्यथा को तेरे चेहरे से न पढ़ सकूं। मैं पिछले काफी दिनों से देख रहा हूँ कि तुम उदास, थकी-हारी और रूग्ण दिख रही हो। तुम्हारा स्वास्थ्य बल और मुख की चमक भी लुप्त हो रही है। कहते हुए दधिवाहन के शब्द स्नेह की आर्द्रता में भीगे बिना न रहे। दो पल रूककर वे बोले-पद्मे ! अगर तुम अपनी चिंता का कारण नहीं कहोगी तो भला उसका निराकरण कैसे होगा? वे साग्रह बोले-देवी! नहीं कहोगी, तब तक मेरे अन्न-जल का परित्याग है। अब तो पद्मावती को चाहे-अनचाहे कहना ही था। वह जैसे तैसे साहस बटोरकर बोली-प्राणनाथ! पिछले एक माह से मेरे मानस-कक्ष में एक ही विचार कौंध रहा है कि राजसी वेशभूषा धारण करके मैं अपने आपको पुरूषाकार दूं। इसके साथ गजराज की अम्बाड़ी पर बैठकर नगर की प्राकृतिक सुषमा को निहारूं। और एक बात, आप अपने हाथों में छत्र लेकर मेरे समकक्ष बिराजे।

ओह! तो इतनी छोटी सी बात के लिये इतनी बड़ी चिंता ! प्राणप्रिये! इस संकोच में तुमने अपने शरीर को कितना कमजोर कर दिया। यदि तुम तत्क्षण यह बात कह देती तो न मुझे मानसिक कष्ट उठाना पड़ता, न गर्भस्थ शिशु पीड़ित होता! ठीक है, जब जागे तब सवेरा। अब जब तुमने मन की बात कह दी है तो कल का सूर्योदय तेरी गज-सवारी का अभिनंदन करेगा।

राज-निर्देश से शीघ्र ही सारी तैयारियाँ हो गयी। राजवेश में पद्मावती का तेज और ओज शतगुणित हो सभी को विस्मित कर रहा था। गज-सवारी चंपापुरी के मुख्य मार्ग से आगे बढ़ने लगी। जिन-जिन गलियों-चौराहों से यात्रा गुजरी, वे वे गलियाँ और चौराहें जनसमूह से आबाद हो गये। चंपापुरी के भविष्य की वर्धापना और अभिनंदना में भला कौन पीछे रहता। कुंकुम व इत्र का छिड़काव हुआ। पुष्पों की वर्षा ने नगर को महक से भर दिया।

नगर की परिक्रमा देता हुआ गज कदली वन में प्रविष्ट हुआ। कुछ क्षणों में मुस्कान मुश्किलों के बोझ तले दबने लगी। उन्मत्त हो गजराज इधर-उधर भागने लगा। विकट परिस्थिति का समुचित आंकलन कर महावत ने गज को नियंत्रित करने का प्रयत्न किया तो गज ने महावत को सूंड में पकड़कर आकाश में उछाल दिया।

अब स्थिति अधिक भयंकर थी। प्राणों के तार छलनी-छलनी हो रहे थे। दधिवाहन समझ चुके थे कि इस स्थिति से उबरना अति कठिन है। पद्मावती की भयभीत आँखों में आँखें डालकर एक वृक्ष की ओर संकेत करते हुए कहा-पद्मेऽऽऽ ! देख! सामने जो वृक्ष है, उसकी डाल को पकड़कर ही हम प्राण-रक्षा कर सकते हैं। ध्यान रखना, जैसे ही हाथी उसके पास पहुँचे, तुम उस शाखा को पकड़ लेना।

पद्मावती की आँखों में केवल और केवल भय की परछाईयाँ थी। वह समझ रही थी-यह सारा खेल जीवन और मृत्यु के बीच का है। वह संकल्पपूर्वक शाखा को पकड़ने को उद्यत होती, उससे पहले चिंघाडता गजराज उससे आगे निकल गया। दधिवाहन ने सतर्कता से शाखा को पकड़कर जीवन रक्षा कर ली, और अम्बाडी पर अकेली रह गयी पद्मावती।

एक तनाव....उद्विग्नता....संकट ने उसके चित्ततंत्र को हिलाकर रख दिया। गहन वन....वृक्षों की कतारें....नदी-नाले पीछे छोड़ता हुआ गजराज अविश्रान्त भागा जा रहा था। चंपापुरी सैंकड़ों मील पीछे छूट गयी थी।

प्रहर-दो प्रहर की लम्बी अवधि व्यतीत होने के

उपरान्त गज की गति सामान्य हुई। यह प्यास से आकुल-व्याकुल होता हुआ वह पानी की खोज में घुमने लगा। इसी तलाश में वह एक तालाब किनारे पहुँचा और प्यास बुझाने लगा।

इस अवसर को पद्मावती गंवाना नहीं चाहती थी, फिर किस्मत भी उसके साथ थी कि तालाब की पाल गजराज की पीठ के समानान्तर थी। जैसे ही गजराज पानी पीने को उद्यत हुआ कि पद्मावती सतर्कतापूर्वक अंबाडी से पाल पर कूद गयी। पद्मावती नीचे उतर तो गयी पर अब जाना कहाँ? उसके सामने मुश्किलें बहुत थी और वह नितान्त अकेली। कोमलांगी और अज्ञात भावी से भयभीत !

हिंस्र प्राणियों से हरा-भरा कानन। चिहुंदिशि डर! घुप्प अंधेरा! बिखरी कठिनाइयाँ! पर अब डरने से भी कोई फायदा न था। मुश्किलों के अंधेरे में एक दीप टिमटिमा रहा था-वह था पंच परमेष्ठी की शरण, आत्म-श्रद्धा और धर्म-साधना का। उसके कदम अनजानी राहों पर बढ़ गये। हृदय में न जीवन की अभीप्सा थी, न मृत्यु का खौफ था।

इसे श्रद्धा का चमत्कार ही समझना चाहिये कि बीहड़ वन में उसे एक तापस के दर्शन हुए। तापस स्वयं आश्चर्य में था कि एक स्त्री, जिसके मुख पर कोमलता, निर्मलता और पवित्रता तैर रही है, उसका बीहड़ वन में आगमन।

करूणा भरे मन से वह पद्मावती के करीब पहुँचा। पद्मावती अपरिचित पुरूष को देखकर घबरायी तो सही पर तापस की वत्सलता ने उसे शीघ्र ही भयमुक्त कर दिया।

भगिनी! लगता है तुम राह-भूली हो। इस घने अरण्य में कैसे आ गयी? स्नेहसिक्त शब्द-आलम्बन पाकर पद्मावती ने आप बीती कह सुनाई।

तापस से सान्त्वना देते हुए कहा-बहिन! तुम चलती-चलती थक गयी होगी और सुबह की भूखी-प्यासी होगी। चलो, मेरे आश्रम में। जल और फल लेकर स्वस्थ बन जाओ। तुम्हें अब डरने की कोई जरूरत नहीं है। अटवी मैं पार करवा दूंगा।

पद्मावती सुबह की भूखी-प्यासी थी। जल की शीतलता ने थकान को हर लिया और फलों की मीठास ने आगामी यात्रा की ऊर्जा दी। इस यात्रा में सरलमना तापस उसके साथ था। काफी दूरी तय करने के उपरान्त जोता हुआ भू-भाग आ गया। तापस वहीं रूककर बोला-बहिना! अब मेरी मर्यादा आ गयी है। मैं जोती हुई भूमि पर नहीं चल सकता, फिर मार्गदर्शन की विशेष जरूरत भी नहीं है। तुम सीधी इसी राह पर चलते जाना। दंतपुर पहुँच जाओगी और चंपा वहाँ से कोई ज्यादा दूर नहीं है।

पद्मावती तापस की सहृदयता को कृतज्ञतापूर्वक नमन कर दंतपुर की ओर बढ़ चली। यद्यपि दंतपुर जितना करीब दिख रहा था, उतना था नहीं तथापि संध्या होते होते वह दंतपुर की सीमाओं में पहुँच गयी।

अपरिचित क्षेत्र....! अनजाने निवासियों के मध्य एक प्रवासी कहाँ जाएँ....क्या करें....किसके सामने दु:खड़ा रोये। किसी के समक्ष सहायता के लिये पहुँचे और गलत हाथ में पड़ जाए तो जीना दुष्कर हो जाये।

पद्मावती अच्छी तरह समझ रही थी कि अभी मेरा पुण्य-बल निर्बल है। फिर से आपत्ति के बादल मंडरा सकते हैं, तब क्यों न मैं निस्पृह श्रमण-श्रमणियों की सुखद शरण में पहुँच जाऊँ। दुनिया धोखा दे सकती है पर निर्ग्रन्थ नहीं।

इसी सोच में उसने साधु-साध्वियों की तलाश की। पुण्य योग से साध्वी भगवंत दंतपुर में बिराज रही थी। उनके सानिध्य में पहुँचकर पद्मावती को आत्मिक संतोष हुआ। श्रमणी के मुख से संसार की निस्सारता, संयम की रमणीयता, भोगों की क्षणभंगुरता और त्याग की विशिष्टता से परिपूर्ण प्रेरक वचनों को सुनकर पद्मावती का हृदय-पद्म विकस्वर हो उठा।

वैराग्यवासित हो वह संयम पथ की राह निहारने लगी। दीक्षित करने से पूर्व प्रवर्त्तिनी महोदया ने सारी जानकारी मांगी तो उसने सम्पूर्ण अतीत दोहरा दिया पर वैराग्य के शिखर पर खड़ी पद्मावती गर्भवती होने की बात कह न पायी। उसका चिंतन था कि यदि गर्भवती होने की बात कह दी तो दीक्षित नहीं हो पाऊंगी।

दीक्षित होने के बाद गर्भवती होने के स्वाभाविक संकेत प्रकट होने लगे। स्थिति स्वत: ऐसी बन गयी कि न चाहने पर भी पद्मावती को खुलासा करना पड़ा। उलाहना तो मिलना ही था। पर अब क्या हो सकता था। भीतर ही भीतर दिन बीतने लगे। खिसकते दिनों के साथ गर्भावधि पूर्णता के करीब थी। (क्रमश:)

प्रभु महावीर
जन्म कल्याणक
पर
विशेष आलेख

परमात्मा महावीर से सीखें

–आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

परमात्मा महावीर का जीवन दर्शन अनूठा है। उनके जीवन की घटनाएँ हमें पूर्ण जागरुक बना सकती है। दो घटनाएँ देखें-

जिस रात्रि में परमात्मा महावीर त्रिशला माता के गर्भ में पधारे, उस रात्रि में इन्द्रमहाराज की आज्ञा से तिर्यक् जृंभक देवों ने सिद्धार्थ महाराजा के भंडार को सोने, चांदी, रत्नों से भर दिया।

परमात्मा के अतिशय प्रकर्ष पुण्य के परिणाम स्वरूप राजा सिद्धार्थ हर क्षेत्र में ऊँचाई को प्राप्त करने लगे। राज्य का विस्तार होने लगा। दिग्दिगंत में उनकी यशोगाथाऐं गाई जाने लगी।

सिद्धार्थ महाराजा और त्रिशला महारानी ने चिंतन किया- जब से यह जीव गर्भ में आया है, तब से हम हर दृष्टि से बढे हैं- धन-धान्य से, राज्य से, सुख से, शांति से अभिवृद्धि का अनुभव हो रहा है। यह सब गर्भस्थ जीव का ही प्रभाव है। अत: पुत्र का जन्म होने पर उसका नाम गुणों के आधार पर 'वर्धमान कुमार' ऐसा रखेंगे। वर्धमान शब्द का अर्थ होता है- बढ़ता हुआ! हम लगातार बढ रहे हैं।

समय व्यतीत होने लगा। गर्भ-काल बीत रहा था। त्रिशला महारानी की प्रसन्नता उसके हाव-भाव में प्रकट होती थी। एक समय गर्भ में बिराजमान परमात्मा ने विचार किया कि माँ के पेट में गर्भ-पिण्ड जब हलन-चलन-कंपन की क्रिया करता है, तो माँ को पीड़ा होती है। क्यों न मैं हिलना डुलना बंद कर दूं ताकि माँ को पीड़ा न हो!

संसार में अन्य बच्चे तो अपने आपको स्थिर नहीं कर सकते। पर मैं तो कर ही सकता हूँ। इससे मेरी माँ को बहुत शाता पहुँचेगी। मेरे कंपन, हलन, चलन बंद कर देने से माँ को सुख मिलेगा।

मातृ-प्रेम के इन विचारों को क्रियान्वित करते हुए परमात्मा ने अपनी काया को स्थिर कर दिया। मातृ-भक्ति का यह उपक्रम सारी दुनिया को दिया गया एक संदेश है। परमात्मा की मातृ-भक्ति का यह अनूठा उदाहरण है।

परमात्मा के इस आदर्श उदाहरण को अपने जीवन में उतारना है। जीवन में माता-पिता के उपकार अनंत हैं। अपने जीवन में हमें संकल्प करना है कि कुछ भी हो जाये पर हम अपने उपकारी माता-पिता को जरा-सा भी दुख नहीं पहुँचायेंगे। परमात्मा ने संसारी जीवों के समक्ष एक आदर्श उपस्थित करते हुए सीख दी है कि संसार के जीवन में माता-पिता के प्रति अपना व्यवहार कैसा होना चाहिये।

परमात्मा ने माँ के सुख के लिये अपना हलन-चलन बंद किया। पर इस निर्णय का परिणाम विपरीत हुआ। त्रिशला महारानी चिंता में पड़ गई। रोजाना भीतर ही भीतर हलचल मचाने वाला मेरा गर्भ आज शांत कैसे हो गया है?

पहला दिन चिंता में बीता। पर दूसरे दिन धीरज खत्म हो गया। उसका चेहरा उतर गया। आंखों से आंसु बहने लगे। मन की खिन्नता और अप्रसन्नता शब्दों द्वारा प्रकट होने लगी।

ओह! मेरे गर्भ को क्या हो गया? पहले हिलता था, अब कुछ भी हलचल नहीं है। गर्भ गल गया है... गिर गया है...! मेरे गर्भ को कुशलता नहीं है।

त्रिशला रानी की पीड़ा सखियों से देखी नहीं जा रही थी। वे सांत्वना देती। नवकार का जाप करने का कहती। पर त्रिशला माँ का मन कहीं पर, किसी में नहीं लगता। न खाने में... न पीने में...! मन में सोचती- जरूर मैंने पूर्व भव में पाप किया होगा। घोंसले तोड़े होंगे! जंगलों में आग लगाई होगी! जीव हिंसा की होगी!

ओह! कैसा मेरा दुर्भाग्य! चिंतामणि रत्न किसी सामान्य-प्राणी के पास कैसे रह सकता है? हे दैव! ये तूंने क्या किया? पहले सपने दिखाये। जोशियों ने भविष्यवाणी की। और मुझे धोखा दे दिया। मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था हे भाग्य देवता! जो तूंने मेरे साथ विश्वासघात किया।

हे कुलदेवता! हमने हमेशा आपकी माला फेरी है... पूजा की है...! आप हमारे कुल के रक्षक-रक्षिका हो! कहाँ हो! मेरा दुख दूर करो।

अरे! किसके आगे जाकर मैं अपनी पीड़ा कहूँ।

समूचा राजभवन उदास हो गया। संपूर्ण प्रजा में शोक छा गया। नृत्य-उत्सव बंद हो गये।

भगवान महावीर को अपने अंगों को स्थिर किये कुछ ही समय बीता था। परमात्मा ने चिंतन किया- अवधिज्ञान का उपयोग कर देखूँ तो सही कि मेरी इस क्रिया से मेरी माँ को कितना सुख पहुँचा होगा!

दर्द न होने के कारण माँ बहुत प्रसन्न होगी।

परमात्मा ने अवधिज्ञान से माँ की चित्त-दशा देखी।

ओह! यह क्या हुआ? मैंने तो माँ के सुख के लिये किया, वही कार्य माँ के लिये पीड़ा का कारण बन गया। अभी मेरा जन्म नहीं हुआ। मुझे देखा नहीं, फिर भी मुझ पर इतना प्रेम है, तो जब मुझे देखेगी, तब कितना प्रेम होगा! फिर वे मुझे दीक्षा की आज्ञा कैसे देगी? उनका तो रो-रोकर बुरा हाल होगा। फिर मैं दीक्षा कैसे ले पाऊँगा!

परमात्मा ने उस समय संकल्प किया कि माता-पिता के जीवित रहते दीक्षा-ग्रहण नहीं करूँगा।

परमात्मा के इस अभिग्रह के आधार पर कई लोग यह तर्क देते हें कि जब परमात्मा ने ऐसा संकल्प किया तो हम भी माता-पिता के जीवित रहते दीक्षा कैसे लें?

इसका समाधान यह है कि परमात्मा जानते थे कि मेरे माता-पिता के जीवित रहते यदि दीक्षा ली तो उनकी दुर्गति हो सकती है। उनकी आत्मा का कल्याण इसी में है कि वे माता-पिता के स्वर्गवास के बाद में दीक्षा ले। साथ ही यह समझ लें कि परमात्मा के उदाहरण सामान्य व्यक्तियों पर लागू नहीं होते। उनका जीवन-व्यवहार लोकोत्तर माना गया है।

आदिनाथ परमात्मा की दीक्षा का प्रसंग भी हमें याद रखना चाहिये। आदिनाथ प्रभु ने रोती-बिलखती माता को छोड़ कर दीक्षा ली। वह इसलिये कि परमात्मा जानते थे कि मेरी माता का कल्याण इसी से होना है। उनका रोना ही उनकी आत्मा के लिये वरदान साबित होगा। और ऐसा ही हुआ।

ये दोनों घटनाऐं हमें सीख देती है कि संयम लेना हो तो परमात्मा आदिनाथ का उदाहरण सामने रख कर शीघ्र संयम-ग्रहण कर लेना चाहिये। और संसार में रहना पड़े महावीर प्रभु की घटना का संदेश ग्रहण करके यह संकल्प करना चाहिये कि घर में हम अपने उपकारी माता-पिता को जरा-सा भी दुख नहीं पहुँचायेंगे।

हमें वैसा नहीं करना है, जैसा प्रभु ने किया है।

हमें वैसा करना है, जैसा प्रभु ने फरमाया है।

परमात्मा ने संकल्प-ग्रहण करने के साथ ही अपने अंगों का हलन-चलन प्रारंभ किया।

और माँ नाच उठी। प्रफुल्लित होकर सखियों से कहने लगी- अरे सखियों! उदासी दूर करो। पहले मेरा गर्भ हिलता-डुलता नहीं था, अब हिलता-डुलता है। मेरा गर्भ सकुशल है। माता त्रिशला के चेहरे पर उल्लास भरा आनंद छाया हुआ था। वह बार-बार घूम-घूम कर सबके सामने अपने चित्त की प्रसन्नता को व्यक्त कर रही थी।

पूरा राजभवन नाच उठा। प्रजा में आनंद छा गया। सखियों के उदास मुखडे पर आनंद की उर्मियाँ छा गई। चारों ओर पूरे राज्य में खुशियों की जैसे बहार छा गई।

शास्त्रों के अनुसार यह घटना परमात्मा के जनम से पौने तीन मास पूर्व घटी थी। एक-एक कर दिन व्यतीत होने लगे। त्रिशला महारानी बहुत सावधानी से गर्भ का पोषण करने लगी।

अब दूसरी घटना देखें

कल्पना करो, हम आप इस पंचम काल में कल्प-सूत्र श्रवण के समय परमात्मा महावीर के जन्म होने का संवाद मात्र सुनते हैं तो इतना आनंद आता है। तो जिस समय साक्षात् परमात्मा जन्मे थे, तब क्या अनूठी स्थिति निर्मित हुई होगी! पूरा क्षत्रियकुण्ड आनंद सागर में गोते लगा रहा होगा।

शास्त्रकार फरमाते हैं- तीर्थंकर परमात्मा का जब जन्म होता है, तब एक क्षण के लिये संपूर्ण राज लोक में आनंद छा जाता है... प्रकाश व्याप्त हो जाता है। नरक में अपार दुख भोगते नारकी जीव भी एक क्षण के लिये सुख को अनुभव करते हैं। यह परमात्मा के कल्याणक का अतिशय है।

प्रथम नरक में क्षण-भर के लिये ऐसा प्रकाश छा जाता है जैसे सूर्य का उदय हुआ हो!

दूसरी नरक में बादलों से आच्छादित सूर्य का प्रकाश,

तीसरी नरक में चंद्र का प्रकाश,

चौथी नरक में आच्छादित चन्द्र का प्रकाश,

पांचवीं नरक में नक्षत्र का प्रकाश,

छठी नरक में आच्छादित नक्षत्र का प्रकाश,

सातवीं नरक में टिमटिमाते तारे का प्रकाश व्याप्त हो जाता है।

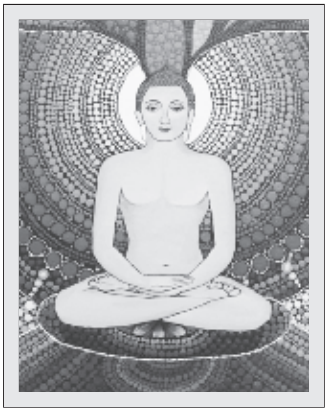

उस समय दिशाऐं हर्षित होकर नाचने लगती है...! संपूर्ण पृथ्वी उल्लसित हो जाती है। देवलोक में दुन्दुभि की मधुर लहरियाँ बजने लगती है।

अहो! क्या परमात्मा का अतिशय है!

प्रभु के जन्म की विशिष्टताओं का वर्णन करने बैठे तो पूरा ही न हो!

शास्त्रकार कहते हैं कि कभी भी सारे ग्रह अपनी उच्च राशि में नहीं आते! पर परमात्मा के प्रकर्ष पुण्य का यह अद्‌भुत अतिशय है कि सारे ग्रह पल-भर के लिये अपनी उच्च राशि में पहुँच कर जैसे परमात्मा को बधाते हैं।

अपने पूर्व भवों के पापकर्म के उदय के कारण नरक के जीव कभी भी सुख का अनुभव नहीं करते, पर परमात्मा के जन्म के समय नरक के समस्त जीव पल भर के लिये सुख का अनुभव करते हैं।

नरक में सदा घोर अंधकार होता है, पर प्रभु के जन्म के समय सर्वत्र प्रकाश छा जाता है।

चौदह राजलोक में भ्रमण कर रहे जीव एक साथ कभी सुख का अनुभव नहीं करते, पर प्रभु के जन्म

कल्याणक का ऐसा अतिशय है कि सारे जीव एक साथ सुख का अनुभव करते हैं।

सभी चौसठ इन्द्र अपने-अपने सुखोपभोग में डूबे रहते हैं, परन्तु अन्यत्र कहीं पर भी नहीं मिलने वाले सारे इन्द्र परमात्मा के जन्म के समय अभिषेक करने के लिये एक साथ... एक समय... एक ही स्थान पर मिलते हैं!

इसी तरह हमारे आत्मा पर लगे कर्मों के अंधकार का नाश हो और कल्याणक के समय होने वाले प्रकाश का प्रभाव हम सभी पर अतिशीघ्र विस्तीर्ण हो, यही काम्य है।

(तर्ज- रत्नाकर पच्चीसी)

होता जनम जब वीर प्रभु का, तम जगत का वे हरे।
सुख का नरक के जीव भी इक पल सदा अनुभव करे।
परमातमा अतिशय से संयुत कर सके कोई होड़ ना।
ऐसे प्रभु महावीर को मैं भाव से करूँ वंदना।।

(पूज्यश्री द्वारा विवेचित कल्पसूत्र प्रवचन से)

मुमुक्षु श्री विजयकुमार कोचर का सम्मान

सूरत 13 मार्च। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा के सांनिध्य में भागवती दीक्षा अंगीकार करने जा रहे मुमुक्षु श्री विजयकुमार (विक्की) गिरधारीलालजी कोचर नंदुरबार निवासी का केयुप सूरत की समस्त शाखा द्वारा बहुमान पू. गच्छगणिनी साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की सुशिष्याएँ पू. साध्वी प्रितिसुधाश्रीजी. म. सा. आदि ठाणा-10 की निश्रा में 13 मार्च 2019 को श्री शीतलवाड़ी खरतरगच्छ जैन उपाश्रय, गोपीपुरा, सूरत में किया गया।

प्रारंभ में पूज्या साध्वी प्रितिसुधाश्रीजी म. द्वारा मंगल पाठ, फिर पू. साध्वीप्रियस्नेहांजनाश्रीजी म. प्रियश्रेयांजनाश्रीजी म. द्वारा प्रासंगिक प्रवचन, साध्वी श्री प्रियमेघांजनाश्रीजी म. ने संयम जीवन का सार बताते एक गीतिका से त्याग की महिमा गाई।

इस अवसर पर श्री शीतलवाड़ी संघ के अग्रणी श्री पवनजी पारख ने मुमुक्षु के बारे में अपने भाव व्यक्त किये और श्री संघ की ओर से उनको संयम जीवन में अग्रसर होने की मंगल शुभकामनाएँ दी।

के-युप सूरत की तीनों शाखाओं, खरतरगच्छ महिला परिषद् सूरत शहर शाखा (शीतलवाड़ी) द्वारा मुमुक्षु का क्रमशः बहुमान किया गया। फिर मुमुक्षु ने अपने भाव व्यक्त करते हुए संयम की भावना प्रगट होने का अपना अनुभव व सकल संघ को दीक्षा में पधारने का आमंत्रण दिया।

कार्यक्रम को भव्यता बनाने के लिए पर्वत पाटीया शाखा से गौतमजी मालू और उनके सदस्य पाल शाखा से प्रवीणजी लुनिया और उनके सदस्य, सूरत शहर शाखा से महेंद्रजी छाजेड़ और उनके सदस्य गण एवं सूरत शहर शाखा की महिला सहित, श्रीसंघ के पुरुष व महिला बड़ी संख्या में मुमुक्षु का अभिनंदन करने उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन के-युप सूरत शहर शाखा के सचिव अल्पेश छाजेड़ ने किया।

इसी तरह श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ मुंबई द्वारा मुंबई में पू. साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म. सा. के सानिध्य में एवं खरतरगच्छ महिला परिषद् राजनांदगांव शाखा द्वारा अपने संघ में मुमुक्षु का अभिनंदन किया गया।

गुरु स्मृति
60

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

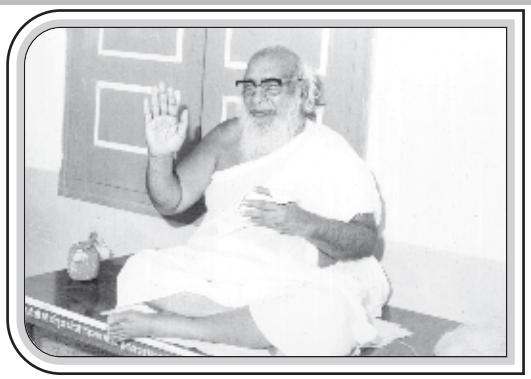

संध्याकाल के उस निश्चित समय की हम सभी शिष्यगण दोपहर से ही प्रतीक्षा करने लग जाते थे। वह समय गुरुमिलन का था। अनुभवों के रत्नों से हमारी झोली का कोष भरने का समय था।

पूज्यश्री की अतीत में छलांग लगी। हम भी गुरुदेवश्री के भावप्रवण उस धाराप्रवाह से परिपूर्ण भागीरथी में बहने लगे।

पूज्यश्री ने सन् 1954 के कालखण्ड में प्रवेश किया था। हम सब भी उनके साथ-साथ उस काल खण्ड की उन घटनाओं में गोते लगाने लगे।

पूज्यश्री ने अमरावती की चर्चा करनी प्रारंभ की। मालव प्रदेश से विहार कर वे महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में पधारे थे। अमरावती में रूकना हुआ था। संघ का आग्रह स्वाभाविक था। सार्वजनिक प्रवचनों की अनूठी छाप थी। नवपद ओली की आराधना को निश्रा मिली थी। महावीर प्रभु के जन्म कल्याणक महोत्सव का आयोजन संपन्न हुआ था।

पूज्यश्री की सभाओं में धारासभा के तत्कालीन अध्यक्ष एवं नागपुर विद्यापीठ के उपकुलगुरु श्री ले. कर्नल पं. कुंजीलालजी दुबे का बहुत बार आगमन हुआ था। उनकी अध्यक्षता में कई कार्यक्रमों का संयोजन किया गया था।

अमरावती के वातावरण ने पूरे क्षेत्र में धर्म व क्रान्ति की एक लहर पैदा की थी। अमरावती से विहार कर पूज्यश्री आर्वी पधारे थे।

दादावाड़ी का नवनिर्माण हुआ था। पहले से ही विनंती कर जय बोल दी गई थी कि प्रतिष्ठा पूज्यश्री के सानिध्य में संपन्न होगी।

पूज्यश्री प्रतिष्ठा करवाने पधारे थे। इस दादावाडी का निर्माण मूल जैसलमेर वर्तमान में आर्वी निवासी संखलेचा गोत्रीय श्री गोकुलदासजी चांदमलजी गुलाबचंदजी दरियावसिंहजी हुलासमलजी परिवार द्वारा किया गया था। यह निर्माण उन्होंने श्री चांदमलजी की मातुश्री चंद्रकुंवरबाई की पावन स्मृति में करवाया था।

दादावाड़ी की प्रतिष्ठा के लिये आठ दिनों का भव्य महोत्सव किया गया था। प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रारंभ वैशाख सुदि 6 ता. 8 मई 1954 को हुआ था। जबकि प्रतिष्ठा वैशाख सुदि 13 ता. 15 मई 1954 को संपन्न हुई थी।

प्रतिष्ठा महोत्सव

श्री सकल संघ

आमंत्रण पत्रिका आर्वी शहर

धारावाहिक कथा 7

अधूरा सपना

प्रमोद गुरु चरणरज साध्वी विद्युत्प्रभाश्री जी म.

(गतांक से आगे)

राजा की आँखें राजकुमार की आँखों पर ही टिकी हुई थी। राजा ने जब राजकुमार की आँखों में उभरती चमक देखी तो वे समझ गये कि यह संबंध राजकुमार को पसन्द है।

राजा सभा विसर्जन कर सीधा अन्त:पुर में पहुँचा। अन्य दिनों की अपेक्षा आज राजा का अंदाज उसके आँखों का नूर कुछ अलग कहानी बयां कर रहे थे। ज्योंहि महारानी ने तेज कदमों से आते हुए महाराज को देखा तो तुरन्त अपने स्थान से खड़ी होकर महाराज के स्वागत में दो कदम आगे बढ़ी।

महारानी आगे बढ़कर महाराज तक पहुँचे तब तक तो महाराज आकर उचित स्थान पर आसीन हो गये। उन्होंने मुस्कुराते हुए महारानी को कहा- तुम कब से मुझ पर उपालंभों की बौछार कर रही थी कि मैं अपने राजकीय जिम्मेदारी से समय निकाल कर अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों को भी संपन्न करूं। कुमार पुष्पचूल दिनों दिन यौवन के कदमों को न संभाल पाने के कारण अवनति की ओर जा रहा है। उसके बहते उन्मादी कदमों को थामने का एक ही उपाय है कि हम उसे नारी के पाश से बांध दे। तुम्हारा प्रतिदिन का यह मंत्र जाप था। क्यों सही कह रहा हूँ महारानी जी?

महारानी महाराजा के आते ही बात करने के इस अंदाज से थोड़ी हड़बड़ायी!

क्या बात है? महाराज कहीं मेरे रोज 2 के कथन से नाराज तो नहीं हुए? फिर महाराजा के चेहरे पर खेल रही अठखेलियों को देखा तो वे समझ गयी कि वे आज कुछ अलग ही अंदाज में है!

महारानी ने भी उसी अंदाज में कहा- मेरा उपालंभ सुनता कौन है? मैं देने का काम कर सकती हूँ पर ग्रहण करना तो आपकी इच्छा पर निर्भर करता है। मैं महलों की चारदिवारी में रहकर सीमित ही तो सोच सकती हूँ। मेरे चारों ओर मात्र परिवार ही है पर आपके चिंतन का घेरा मेरे से कई गुणा ज्यादा होगा। पूरी प्रजा आपका परिवार है। पुष्पचूल की हरकतें मेरी समस्त खुशियों को लील रही है। इसीलिये बार-बार आपकी संपूर्णता पर भरोसा होने पर भी स्मरण दिलाती हूँ।

अरे...अरे...! देवी! अब अपनी इस दार्शनिकता पर नियंत्रण लगाओ ताकि मैं अपनी बात आगे बढ़ा सकूं। महाराजा में हल्के से महारानी को...थपथपाते हुए टोका! ओह...! तो यह बात हैं मुझे क्या पता कि आज आप मेरे लिये कोई नयी बात लेकर पधारे हैं।

महाराजा ने तभी बाहर खड़े अपने निजी सहयोगी को पुकारा-वज्रसिंह! अंदर आकर वह राजसभा वाली तस्वीर दे जाना!

महारानी बात समझती इतने में तो वज्रसिंह ने आकर वह तस्वीर महाराजा को थमा दी।

महाराजा ने तस्वीर से पर्दा उठाया। महारानी महाराजा के पीछे खड़े होकर उत्सुकता से उस तस्वीर को देख रही थी। क्या दिव्य सौन्दर्य है इस चित्रकुमारी का! ऐसा लगता है किसी स्वर्गलोक की अप्सरा को ही किसी कुशल चित्रकार की अंगुलियों की कला का स्पर्श मिला है। यह तस्वीर में ही इतनी हसीन लग रही है तो वाकई में कितनी सुन्दर होगी। लगता है ब्रह्मा ने ब्रह्माण्ड के सारे शुभ पुद्गलों को इसमें नियोजित कर लिया है।

महाराजा महारानी की आँखों में छलक-छलक रही पसंद को समझ गये थे। फिर भी कहा- हम इस चित्रपुरी को हमारे राजकुमार की जीवनसंगिनी बनाकर इस महल की चारदिवारी को जीवंत और रौनक से भरना चाहते हैं। तुम्हारी क्या राय है?

महारानी के अधर ही नहीं बल्कि आँखें भी चमक उठी। उन्होंने कहा-आज आप वाकई में मेरे लिये बहुत बड़ी

सौगात लेकर पधारे हैं। क्या दिव्यता है इस राजकुमारी के सौन्दर्य में... क्या माधुर्य है इसकी आँखों में। मैं तो चाहती हूँ आप जल्दी से जल्दी इसे युवरानी बनाकर महलों में ले आईये!

महाराजा महारानी का उतावलापन देखकर हँस पड़े। उन्होंने कहा-तुमने अभी तक तो मात्र चित्र देखा है। चित्र देखकर ही तुम इतनी मुग्ध हो गयी हो तो साक्षात् देखकर तो पगला ही जाओगी। महारानी ने कहा-इसका निर्मल सौन्दर्य किसी को भी पागल कर सकता है। अब आप इसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि भी बता दीजिये। महाराजा ने पारिवारिक पृष्ठभूमि स्पष्ट करते हुए राजसभा में दूत के आगमन से लेकर संबंध निवेदन राजकुमार के चित्र दिखाने तक का सारा घटनाक्रम कह सुनाया।

रानी ने प्रसन्नता से अपनी राय देते हुए कहा-यह संबंध हमारे गौरव के अनुरूप हैं। आप अवश्य स्वीकार करे।

दूसरे दिन जब राजसभा में दूत का आगमन हुआ तो विधिवत् संबंध स्वीकार करते हुए राजपंड़ित द्वारा शादी का मुहूर्त्त दिखाते दुए बारात प्रस्थान से लेकर बारात प्रवेश तक की तिथि भी दूत को दे दी।

मणिपुर में जब दूत ने आकर जब सारा घटनाक्रम अपने स्वामी देवदत्त नृप को सुनाया तो उनके सपनों को जैसे पंख मिल गये। अपनी राजकुमारी के लिये इतने विशाल राज्य के युवराज की तो उन्होंने कल्पना नहीं की। वे अपनी बिटिया के सौभाग्य पर इतरा उठे।

पुष्पचूल यद्यपि सोने की भरपूर कोशिश कर रहा था, पर आज निद्रादेवी उसके रूठ गयी थी। आज चूंकि उसकी आँखों में निद्रादेवी की सौत समा गयी थी तो निद्रादेवी सौतियादाह से नाराज होकर पुष्पचूल से विदा ले चुकी थी।

पुष्पचूल की आँखों में अपनी होने वाली जीवनसंगिनी की तस्वीर पूरी तरह अटक गयी थी। पुष्पचूल को लगा तस्वीर धीरे-धीरे सजीव होकर उससे संवाद करना चाहती है। उस तस्वीर की आँखों में एक प्रश्न है जो उत्तर मांग रहा है।

आँखें पूछ रही थी-क्या आप पत्नी के रूप में मेरे साथ न्याय करोगे? मुझे आपके विशाल राज्य...यौवन की उपमा में डूबा सौन्दर्य...भुजाओं का पराक्रम नहीं बल्कि मुझे तो मेरे सपनों को अपने प्यार से छलकाने वाले प्रियतम चाहिये।

मैं तुम जैसे मदमस्त राजकुमार को जीवनसाथी के रूप में कल्पित कर आज जितनी धन्यता का अनुभव कर रही हूँ! क्या शादी के बाद यही अनुभूति रहेगी। क्या मैं वाकई में तुम्हारी योग्य जीवनसंगिनी बन सकूंगी?क्या तुम भी मुझे पाकर अपने सौभाग्य पर धन्यता का अहसास कर रहे होंगे?

और लगा कि पुष्पचूल इस चित्रकुमारी के एक भी प्रश्नं का उत्तर नहीं दे पायेगा। पुष्पचूल इस चित्रकुमारी के प्रश्नों से घबरा कर शय्या से उठ बैठा। वह शयनकक्ष में इधर से उधर चहलकदमी करके अपनी घबराहट को नियंत्रित करने की कोशिश करने लगा। उसकी घबराहट का कारण इस ढिंपुरी की राजनर्तकी थी। इस राजनर्तकी ने लंबे समय से युवराज के हृदय पर कब्जा कर रखा था यद्यपि इस चित्रकुमारी के सौन्दर्य के सामने राजनर्तकी एकदम भी हीन लग रही थी पर वह जानता था कि राजनर्तकी को भूला पाना भी उसके हाथ में न था। वह क्या करे? क्या इस संबंध से इन्कार कर दे? नहीं...नहीं...! वह अपनी चतुराई से अवश्य ही इन दोनों के बीच तालमेल बिठा देगा। राजनर्तकी उसकी हृदयमल्लिका बन सकती है पर वह राजमहलों की महारानी नहीं बन सकती। उसे अपनी चतुराई पर विश्वास करके आश्वस्त रहना चाहिये।

(क्रमशः)

सावर में शिलान्यास महोत्सव

सावर 31 मार्च। गणाधीश पंन्यास प्रवर श्री विनयकुशलमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 की निश्रा में दिनांक 31 मार्च 2019 को अजमेर जिले के सावर नगर में प्रत्यक्ष प्रभावी श्री दादागुरुदेव जिनकुशलसूरिजी दादावाड़ी के भूमिपूजन खनन एवं शिलान्यास महोत्सव का आयोजित किया गया। शासनरत्न श्री मनोजकुमार बाबुमलजी हरण के निर्देशन आयोजित कार्यक्रम में प्रातः स्नात्र पूजा, शांतिधारा, दादा गुरुदेव का पूजन सहित आयोजन हुए। भगवान कुंथुनाथ मंदिर के समीप दादाबाड़ी का तैयार करने का पुण्य सावर निवासी कोठारी के परिवार को मिला।

स्मृति

जीवन जीत गये...

प्रमोद गुरु चरणरज साध्वी विद्युत्प्रभाश्री जी म.

अवंति तीर्थ की प्रतिष्ठा के लक्ष्य से हमारा विहार गतिमान् था। स्वास्थ्य संबंधी, विहार संबंधी और भी अनेक प्रकार की बाधाओं को पार करते हुए हम शाम के समय नागदा गांव में पहुँचे थे। प्रतिक्रमण की क्रिया हमारी संपन्न हुई ही थी कि पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरि के निश्रावर्ती मुकेश प्रजापत द्वारा जानकारी मिली कि इचलकरंजी में संघनिष्ठ परम समर्पित श्रावकवर्य श्री शांतिलालजी ललवानी का दो दिन पूर्व समाधिमरण हुआ है। सुनकर मन को गहरा धक्का लगा।

श्री शांतिलालजी हमारे संघ के निष्ठावान, समर्पित एवं धर्मप्रिय श्रावक थे। अचानक उन्हें ऐसा क्या हो गया कि असमय मृत्यु ने उन्हें आगोश में ले लिया। मैंने जब मृत्यु का कारण पूछा तो पता चला कि उन्हें कुछ माह से असाध्य केंसर था और उसके फैलाव ने उनके जीवन को समेट लिया हैं। मन दार्शनिक अंदाज में सोचने लगा- व्यक्ति कितने विशाल स्तर की कल्पनाएं करता है, अनेक-अनेक सपने सजाकर अपनी आकांक्षाओं के रंग उसमें भरता है, पर उसे अगले ही पल के जीवन का भरोसा नहीं हैं। निसंदेह मृत्यु के आने के दरवाजे अनेक हो सकते हैं पर उसका केन्द्र तयशुदा एक है। कभी कोई आकस्मिक दुर्घटना से मृत्यु का शिकार होता है... कभी कोई सूचना पूर्वक!

शांतिलालजी ललवाणी की पारिवारिक पृष्ठभूमि गच्छीय होने के साथ-साथ क्षेत्रीय भी थी। तो दूर-निकट पारिवारिक रिश्ता भी था, उसके साथ-साथ सन् 2004 में जब इचलकरंजी में पूज्य गुरुदेवश्री की निश्रा में मंदिर दादावाड़ी की प्रतिष्ठा संपन्न हुई थी। उस समय हम भी वहीं थे। वहीं श्राविकाओं के निवेदन पर मणिधारी महिला परिषद् की स्थापना की थी। महिला परिषद् की अध्यक्षा के रूप में सर्वसम्मति से उनकी धर्मपत्नी अ.सौ. श्यामाजी को घोषित किया था।

जब उस समय की घटनाओं का मैं अतीत में डूबकर विश्लेषण करती हूँ तो मुझे लगता है कि मैं गेहुँवर्णीया परन्तु आकर्षक श्यामाजी की संवादशैली से प्रभावित थी परंतु उनके समाधिमरण की घटनाओं को सुना तो लगा कि सामान्य रंग रूप में उन्होंने असामान्य घटनाक्रम को जीया हैं।

जिनशासन में जन्म लेने वाला प्रत्येक व्यक्ति न मृत्यु की कामना करता है... और न जीवन की..., परन्तु वह एक प्रार्थना अवश्य करता है... जब भी मृत्यु हो, समाधिमरण हो! आचार्य से लेकर एक सामान्य साधु भी सदैव यही निवेदन करता है समाधिमरण हो।

प्रार्थना करते हैं सब, पर वे भाग्यशाली होते हैं जिनकी प्रार्थना प्रकृति स्वीकार कर लेती है। उस व्यक्ति का मरण ही नहीं बल्कि जन्म भी सार्थक हो जाता है जिसे समाधिमरण प्राप्त हो जाता है।

शांतिलालजी संपूर्ण स्वस्थ थे। अपनी नियमित आराधना के साथ सामाजिक व्यावहारिक उपक्रमों को सहजता से संपन्न करते थे। अचानक उन्हें स्वास्थ्य की प्रतिकूलता का अनुभव हुआ। सामान्य उपचारों से जब स्वस्थता नहीं लगी तो उन्होंने मुंबई जाकर चेकअप करवाया।

जब बीमारी का नाम सुना तो पूरा परिवार सकते में आ गया पर जब अत्यन्त सावधानीपूर्वक एकांत में धीरे से बीमारी का नाम शांतिलालजी को बताया तो वे न अकुलाये,

न घबराये बल्कि अत्यन्त सहजता से कहा- अरे! क्या हो गया, केंसर हो गया तो! अब तक आत्मशक्ति के साथ शरीरशक्ति का अनुभव किया था। अब आत्मशक्ति का विकास करके शरीर को गौण कर देंगे। आज तक यही तो गुरुजनों द्वारा सुना था। स्वाध्याय में अनुभव किया था जब इसे जीने का अवसर आया है तो इसे भी मुस्कुराकर स्वीकार करना चाहिये।

धर्मपत्नी श्यामाजी, पुत्र संखेश, शैलेश सभी ने समझ लिया कि बीमारी ने पूरी तरह शरीर पर अपना शिकंजा कस लिया है। विदायी तो निश्चित हो गयी है पर हम इस विदायी की वेला में ऐसा क्या करें जिससे यह विदायी इनके लिये मंगलमय बन जाये।

परिवार पर अचानक यह तूफान टूटा था, पर परिवार ने असंतुलित होने की अपेक्षा इसे अपनी परीक्षा की घड़ी समझी और शत प्रतिशत सफल होने के लिये उन्होंने स्वयं को मानसिक रूप से तैयार कर लिया।

श्यामाजी के साथ-साथ पुत्र एवं पुत्रवधुओं में धार्मिक संस्कार रग-रग में भरे थे।

स्वयं शांतिलालजी अपनी अस्वस्थता को स्वस्थता में बदलने के लिये कटिबद्ध हो गये। उनका चिंतन था- इतना विराट् एवं भव्य देवदुर्लभ जीवन मिला! जीवन के पल सन्ध्याकाल में प्रविष्ट हो गये हैं परन्तु मेरी समझदारी तो इसीमें हैं कि रात्रि का अंधेरा होने से पूर्व ही जीवन में नवप्रभात की रोशनी कर लूं।

श्यामाजी एवं उनके पुत्रों ने बताया कि वे लगभग पांच माह अस्वस्थ रहे। इस अवधि में हमें उन्होंने कभी यह नहीं कहा कि मेरे भीतर कितना गहरा दर्द है। बस मात्र उन्हें अपनी आत्मा के कल्याण... आत्मा की शुद्धि एवं उसी की अधिक से अधिक निर्मलता का ध्यान था।

धीरे-धीरे बीमारी बढ़ती गयी। शारीरिक स्थिति कमजोर होती गयी। परन्तु उनकी आत्मिक-शक्ति निरंतर और अधिक बढ़ रही थी। प्रतिदिन दोनों समय का प्रतिक्रमण, परमात्म पूजा एवं इसके साथ सतत पच्चक्खाण में रहते थे। बिना पच्चक्खाण रहना एक पल भी उन्हें मंजूर नहीं था।

अब संसार में रहना उनके लिये रसहीन था। उनका सतत चिंतन था- कितना अच्छा होता मैं संयम लेकर अपने जीवन को सार्थक करता। मैंने अपना मनुष्य जीवन संसार में खो दिया।

आखिर बीमारी भीतर ही भीतर उन्हें शारीरिक रूप से खोखला कर रही थी। 6 जनवरी 2017 को उन्हें बार-बार शौच जाने की तकलीफ बढ़ गयी! परिवार ने उन्हें हॉस्पीटल ले जाने का आग्रह किया तो उन्होंने कहा- नहीं, अब मुझे कहीं नहीं जाना है। बस आज से मुझे बाह्य उपचार के त्याग है। बस अब मुझे अपना उपचार खुद ही करना है। फिर भी परिवार के आग्रह से उन्होंने कम मात्रा में औषधयुक्त पानी जरूर लिया पर तुरन्त कहा- बस यह मेरा अंतिम आहार है और अब मुझे तीनों आहार का त्याग है।

लगभग दस बजे अचानक उन्होंने श्यामाजी से कहा- मुझे पितातुल्य अपने श्वसुरजी से बात करनी है। तुम फोन लगाकर दो। श्यामाजी ने फोन लगाया। उन्होंने अत्यन्त विनयपूर्वक कहा- संभव है, मैंने अपने जीवन में कभी आपकी अवज्ञा की हो अथवा आपका मन दु:खाया हो तो मैं आपसे सारी त्रुटियों के लिये क्षमायाचना करता हूँ। फिर अपने ज्येष्ठ बंधु माणकचंदजी से फोन पर बात करते हुए क्षमा मांगी। सुमेरमलजी ललवाणी को बुलाया और उनसे भी क्षमापना करते हुए कहा- जीवन भूलों का भंडार है। मानव जीवन में हमें पता नहीं कब किस धारा में बहते हुए किसी के भावों से खिलवाड़ कर लेते हैं। और उन्हें मानसिक आघात पहुँचा देते हैं। मैं आपसे हार्दिक क्षमापना करता हूँ।

मात्र एक बार औषधियुक्त पानी लेने के बाद दिनभर जब भी पानी ग्रहण किया, सादा पानी ही लिया। परिवार का निवेदन रहा पर उन्होंने स्पष्ट कह दिया- मेरे तीनों आहार का संपूर्ण आजीवन त्याग है। उनके ससुरजी चलने फिरने में असमर्थ है फिर भी दामाद से मिलने आये! उनके लिये उन्होंने नाश्ते का निवेदन करके नाश्ता करवाया।

श्यामाजी उन्हें पूरा समय कुछ न कुछ सुनाते रहे। बिना किसी आवाज के मात्र परिवार के अत्यन्त निकटतम व्यक्तियों की उपस्थिति में संपूर्ण जागरुकता के साथ स्वाध्याय श्रवण कर रहे थे। पूरे दिन में तीन-चार बार पद्मावती आलोयणा सुनी! जहाँ-जहाँ मिच्छामि दुक्कड़ं आया उन्होंने हाथ जोड़कर उसमें अपना स्वर मिलाया!

दोपहर को कहा- सभी मेरे समीप बैठो और परमात्मा की तस्वीर के दर्शन कराते हुए मुझे प्रभु के गुणों की

स्तुतियाँ सुनाओ! उनके सामने तस्वीर लायी गयी। हाथ जोड़कर उन्होंने प्रभु को वंदना की। फिर कहा- अब गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री द्वारा रचित स्तुति सुनाओ! दो, चार, पाँच स्तुति सुनने के बाद उन्होंने सीमंधर स्वामी का बड़ा स्तवन सुनने की भावना प्रकट की। वह भी सुनाया।

बीतता हर पल उन्हें मौत के निकट ले जा रहा था। संभवत: उन्हें इस बात का अनुमान हो गया था कि मेरे इस जीवन का आयुष्य-कोष खाली होने की तैयारी में है। संध्या होने से पूर्व उन्होंने कहा- क्या मुझे विरतिधर्म मिल सकता है! मेरी भावना है, मुझे संयम प्राप्त हो।

श्यामाजी ने कहा- अब आप कैसे और किनकी निश्रा में संयम लेंगे। अगर कोई गुरु भगवंत होते तो अवश्य ही दीक्षा देते।

उन्होंने कहा- सत्य है! जब समय था, तब जागा नहीं। जब जागा तो समय नहीं। कोई बात नहीं। अभी मैं भावदीक्षा में हूँ। यहाँ से सीमंधर स्वामी के चरणों में जाकर वहाँ उनकी निश्रा में संयम स्वीकार करूंगा।

संध्या के समय उन्होंने विधिवत् पूरी जागरूकता से प्रतिक्रमण किया। प्रतिक्रमण में ही मात्र आवश्यक उपयोग में आ रही सामग्री का आगार रखते हुए सम्पूर्ण परिग्रह का त्याग कर दिया। तीन आहार का तो नवकारसी के समय से पच्चक्खाण हो गया था, अब उन्होंने पानी का भी त्याग कर दिया।

फिर तुरन्त कहा- अभी तक तो सारे त्याग मैंने मात्र आत्मसाक्षी से ही किये हैं। अब मैं विधिवत् अनशन ग्रहण करना चाहता हूँ। श्यामाजी एवं पूरा परिवार समझ रहा था- पंछी पिंजरा खाली करने की तैयारी कर रहा है। पिंजरा रिक्त करने से पूर्व पिंजरे का पूरा निचोड़ निकाल लेना चाहता है।

श्यामाजी एवं परिवार ने उनकी दृढ़ता और जागृति को परखने के उद्देश्य से कहा- आप पूरी तरह से तैयार हैं। आपका मन पूरी तरह से अनशन करने के लिये तैयार है। उन्होंने प्रश्न से भी ज्यादा मजबूत एवं तेजभरी आवाज में दृढ़ता से कहा- एकदम! मेरा मन पूरी तरह से तैयार है। अब आप देरी न करें और जल्दी से जल्दी मुझे गुरुदेवश्री से विधिवत् संथारा करवा दें।

परिवार वालों ने उसी समय रमेश लुंकड़ को बुलवा लिया। रमेश के सामने भी उन्होंने अपना वही मजबूत संकल्प दोहराया। बस अब मुझे संथारा द्वारा पाथेय तैयार करवाओ। इतने में श्यामाजी के भ्राता भी आ गये! उन्होंने पुन: शांतिलालजी की दृढ़ता को परखने के लिए कहा- आप अभी चौविहार अनशन की अपेक्षा तिविहार अनशन कर लिरावें।

तुरन्त रमेश ने गुरुदेव के निश्रावर्ती मुकेश प्रजापत को फोन किया। मुकेश फोन पर उपलब्ध हो गया। रमेश ने शांतिलालजी की सारी स्थिति बताकर उन्हें अनशन करवाने का निवेदन किया। गुरुदेव ने उनकी दृढ़ और जागरूक मानसिकता देखकर उन्हें हितशिक्षा देते हुए जीवमात्र से क्षमापना करवाते हुए उन्हें आगमपाठ से भवचरिमं का पच्चक्खाण करवाते हुए उन्हें इस जीवन की सार्थकता का महत्वपूर्ण कदम संथारा करवाया।

एकत्रित परिवार ने अत्यंत मीठे एवं शांत स्वरों में अरिहंत की धुन प्रारंभ कर दी। वे स्वयं पूर्ण होश में अरिहंत-अरिहंत का उच्चारण करने लगा और अचानक उच्च स्वर से बोले ''सब लोग रास्ते से हट जाओ और मुझे रास्ता दो...मुझे रास्ता दो।'' उनकी आवाज सुनकर सभी ने उनके सामने स्थान खाली कर दिया और वे अरिहंत-अरिहंत कहते हुए पिंजरा खाली करके अदृश्य लोक की ओर प्रस्थित हो गये।

जीवन सार्थक हो गया! अपनी मृत्यु को उन्होंने महोत्सव बना दिया! अपना मरण बालमरण से समाधिमरण और पंडितमरण में बदल दिया। उनकी इस समाधि में परिवार का योगदान कम नहीं रहा। धर्मपत्नी परम धर्मनिष्ठा श्राविका श्यामाजी एवं पुत्रद्वय साथ ही दोनों पुत्रवधुओं का भरपूर सहयोग रहा।

जिस समाधिकरण को शांतिलालजी ने प्राप्त किया नि:संदेह वही प्रत्येक संसारविमुख आत्मा का सपना एवं उद्देश्य है।

दिवगंत आत्मा क्रमश: अतिशीघ्र सिद्धत्व की उपलब्धि करें।

गोत्र का इतिहास
14

ललवानी/लालाणी, बांठिया, बरमेचा, हरखावत, मल्लावत, शाहजी गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

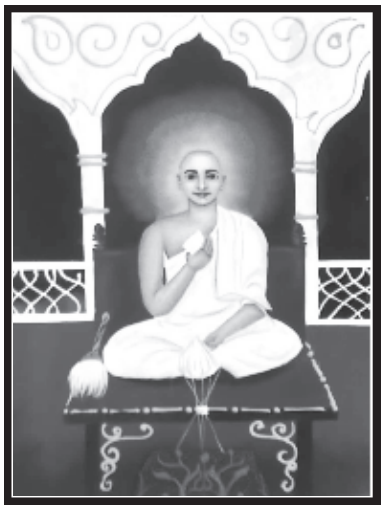

ललवानी/लालाणी

इस गोत्र की स्थापना वि. सं. 1167 में हुई है। घटना रणथम्भोर की है। यहाँ उस समय परमार क्षत्रिय लालसिंह का राज्य था। उसके सात पुत्र थे। सबसे छोटा पुत्र जिसका नाम ब्रह्मदेव था, वह जलंधर रोग से ग्रस्त था। उन दिनों उस नगर में नवांगी वृत्तिकार खरतर गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनवल्लभसूरीश्वरजी म. सा. का अपने शिष्य मंडल के साथ पदार्पण हुआ। राजा लालसिंह ने उनकी महिमा सुनी। वह अपने पुत्र के साथ आचार्य भगवंत के पास पहुँचा। विनयपूर्वक अपने पुत्र के व्याधि की चर्चा की।

आचार्य भगवंत ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा- चिंता मत करो। पुत्र पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जायेगा। इस आश्वासन को पाकर राजा प्रमुदित हो उठा। वह प्रतिदिन गुरुदेव की सेवा में आने लगा। गुरुदेव से जैन धर्म के सिद्धान्तों का बोध पाकर वह बहुत प्रभावित हुआ।

इधर गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनवल्लभसूरीश्वरजी म.सा. के अभिमंत्रित वासचूर्ण से राजा लालसिंह का पुत्र ब्रह्मदेव पूर्ण स्वस्थ हो गया। गुरुदेव से प्रभावित होकर कृतज्ञ राजा लालसिंह सपरिवार पूज्य आचार्य श्री जिनवल्लभसूरि से जैनत्व की दीक्षा ग्रहण कर श्रावक बन गया। लालसिंह के पुत्र लालाणी के वंशज ललवानी या लालाणी कहलाये।

बांठिया

राजा लालसिंह के सबसे बडे पुत्र का नाम बंठ्योद्धार था। उनकी संतान बंठ कहलाई। बाद में उनके द्वारा साधर्मिक बंधुओं में स्वर्ण मोहरों की प्रभावना करने से वे बांठिया कहलाये।

बरमेचा

राजा लालसिंह के सबसे छोटे पुत्र जिसका नाम ब्रह्मदेव था। उनके नाम पर उनके वंशज ब्रह्मेचा या बरमेचा कहलाये।

हरखावत/हरकावत

राजा लालसिंह के वंश में आगे चल कर हरखाजी नामक श्रावक हुए। वे बड़े प्रतापी व्यक्ति थे। उनके वंशज हरखावत या हरकावत कहलाये। इन्होंने सिरोही, जोधपुर, जालोर आदि कई क्षेत्रों में जिनमंदिरों का निर्माण करवाया था। शत्रुंजय की छह री पालित संघ यात्रा का आयोजन किया।

शाहजी

हरखाजी के पुत्र विमलजी हरकावत मेड़ता के नामांकित पुरुष थे। भरुच के बादशाह को जरुरत पडने पर विपुल द्रव्य का सहयोग किया था। तब बादशाह ने उन्हें शाह की पदवी दी थी। परिणामस्वरूप इनके वंशज शाहजी कहलाये।

मल्लावत

पंवार राजा लालसिंह के एक पुत्र का नाम मल्ल था। इनके वंशज मल्लावत कहलाये।

इस प्रकार खरतरबिरुद धारक आचार्य श्री जिनेश्वरसूरिजी महाराज की पट्ट परम्परा में हुए आचार्य प्रवर श्री जिनवल्लभसूरि की पावन प्रेरणा से ललवानी/लालाणी, बांठिया, ब्रह्मेचा/बरमेचा, हरकावत, शाहजी आदि गोत्रों की स्थापना हुई। ये सभी परस्पर भ्राता हैं।

जन्म दिवस पर बधाई

जन-जन को जिन पर नाज... कविता

दिव्यचरणरज साध्वी विश्वज्योतिश्रीजी म.

गर्वित है जिन पर वसुंधरा, जन-जन को जिन पर नाज है
ज्ञान गुण सागर जिनके शिर पर जिनशासन का ताज है
सार्थक किया जनम लाखों का उनका जन्म दिन आज है
मेरे गुरुराज का जन्मदिन आज है...
पारस और रोहिणी के दिल का साज है
मोकलसर की धरती पावन हुई आज है
मीठालाल पर सबको नाज है
उस राजस्थान के प्यारे का जन्मदिन आज है...
बहिन भाई के प्यार का क्या राज है
इनका अपना ही अलग अंदाज है
विद्युत् मणि दोनों ने चमकाया महावीर का ताज है
मेरे गुरुराज का जन्मदिन आज है...
कांति गुरु के इंगित इशारों पर किया काम है
सार्थक किया अपने गुरु का नाम है
जहाज मंदिर दिव्य बनाया धाम है
ऐसे चमकते कोहीनूर का जन्मदिन आज है...
गुरु का जन्मदिन विश्व में आदित्य ज्योति लाया है
विहग ने नव-गीत सुनाया है
कुसुम सुमन ने हंसकर कहा बधाई...बधाई हो

गुरु जन्म बधाई गीत

दिव्यचरणरज सा. विरागज्योतिश्रीजी
विश्वज्योतिश्रीजी म.

(तर्ज: कुछ तुम बोलो...)

हम जन्मदिवस की देते है वर्धापना,
गुरु जीओ हजारों साल प्रभु से प्रार्थना।।
रोहिणीदेवी ने जाया, पारसजी के मन भाया
विद्युत् के दिल में समाया, श्रीसंघ ने सूरि को पाया
घर-घर में आज मिठाई दिल से बांटना...।।
त्रिकाल वाचना तेरी, सबके मन को है लुभाई
पावन हमें भी कर दो, ओ जिनशासन के सांई
गुरु वाणी सुनकर मन की गांठें खोलना...।।
स्वाध्याय का रंग लगाया, प्रमाद को दूर भगाया
केयुप. केएमपी बनाया, संगठन का बिगुल बजाया
सूरि प्रेरणा पाकर अब तो झटपट जागना...
तुम आगम के हो ज्ञाता, तेरा सिद्धों से नाता
समकित देना हमें दाता, हम सबके भाग्यविधाता
अंतर की आंखें अब तो जल्दी खोलना...।।
जब तक सांस चलेगी, मणि गुरु की महिमा गाऊं
सपने में गुरु को देखूं, जागूं तो दर्शन पाऊं
कांतिसूरि के पट्टधर की जय बोलना...।।

गुरु जन्मोत्सव पर काव्यांजलि

रचयित्री– साध्वी सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.

सूरज और चाँद के जैसे, चमकता रहे तेरा नाम ।
रहो स्वस्थ चिरायु हरदम, यही प्रार्थना आठों याम ।
रहो स्वस्थ चिरायु हरदम, यही प्रार्थना आठों याम ।
मंगल जन्म दिवस पर मणि गुरुवर, तुमको मेरा शतशः प्रणाम।।1।।
मुख उद्‌गम से सदा बहे, आगम का विशुद्ध तत्त्वज्ञान ।
विनम्र मधुर तव अमृत वाणी, हृदय को करे शांति प्रदान ।
विनम्र मधुर तव अमृत वाणी, हृदय को करे शांति प्रदान ।
मंगल जन्म दिवस पर मणि गुरुवर, तुमको मेरा शतशः प्रणाम।।2।।
अपनी क्रिया सुझबूझ से, गच्छ को तुम दो वो पहचान ।
कि युगों युगों तक याद रखें, ये जग तेरा अवदान ।
युगों युगों तक याद रखें, ये जग तेरा अवदान ।
मंगल जन्म दिवस पर मणि गुरुवर, तुमको मेरा शतशः प्रणाम।।3।।
ज्ञान-दर्शन-चारित्र हो सम्यक्, दूर हो तव सब अज्ञान ।
साधना सुपथ पर चलकर, चढ़ो निर्विघ्न तुम गुणस्थान ।
साधना सुपथ पर चलकर, चढ़ो निर्विघ्न तुम गुणस्थान ।
मंगल जन्म दिवस पर मणि गुरुवर, तुमको मेरा शतशः प्रणाम।।4।।
सज्जन बन मणिप्रभ गुरुवर, सिद्धि मार्ग पा तुम सर्वोत्तम ।
पूर्ण शशि सम पूर्णता पाकर, बनो सम्यक् दर्शन संग धन्योत्तम ।
पाओ ज्ञान स्वपर प्रकाशक, इक दिन तुम उत्तमोत्तम ।
जन्मदिन पर बधाई देता, तुमको मेरा ये अन्तर्मन ।
खरतरगच्छाधिपति चिरायु रहो तुम, कहता मेरा ये अन्तर्मन ।
मंगल जन्म दिवस पर मणि गुरुवर, तुमको मेरा शतशः प्रणाम।।5।।

बकेला में अभिषेक संपन्न

बकेला 31 मार्च। छत्तीसगढ रत्न शिरोमणि महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी सुभद्राश्रीजी म. एवं नवकार जपेश्वरी साध्वी शुभंकराश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में दि. 31 मार्च को परमात्मा श्री पार्श्वनाथ प्रभु का प्रभावशाली आरोग्यवर्धक अभिषेक संपन्न हुआ, जिसमें अनेक श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही।

फागुन सुद चौदस (कविता)

रचयित्री – प्रवर्तिनी शशिप्रभाश्रीजी म.

फागुन सुद चौदस की तिथि वो पावन ।
बाल सूर्य संग जन्मा, इक बाल नन्हा मनभावन ।
माँ रोहिणी पिता पारसजी के, बरसा हृदय आंगन ।
उमड़-घुमड़ के जैसे, घनघोर घटा कोई सावन ।।1।।
नन्हें कदम वो बढ़ते-बढ़ते, छोड़ ममता का दामन ।
गुरु कांति की अंगुली थामे, चल पड़ा पंचम पद में पावन ।
गुरु अनुशासन और पैने अनुभव ने, तराशा आपका जीवन ।
कोहिनूर बनकर उभरा, ये मोकलसर का नंदन।।2।।
तब था दिल इस बात से, बिल्कुल ही अनजान ।
कि यही बालक इक दिन बनेगा, जिनशासन की शान ।
प्रशांत मुखमंडल और अधरों पे रहे, जिसके सदा मुस्कान ।
षड्दर्शन के ज्ञाता तुम हो, जिनशासन का मान।।3।।
नन्हें दिल में आशा फूटी, छूने को आसमान ।
पुरुषार्थ, भाग्य, नियति, समय सभी थे मेहरबान ।
मुनि, गणि, उपाध्याय, आचार्य, फिर गच्छाधिपति पद पाये महान ।
किंतु मीठा से मणिप्रभसूरि तक का, यह सफर नहीं था आसान।।4।।
आज फिर वही दिन, नतमस्तक होकर करता संगान ।
जन्मदिन मुबारक हो, उड़-उड़ कहे फाग का रंग और गुलाल।।5।।
सज्जनों के दिलों में है, बस यही इक अरमान ।
खुशियों से खुशनुमा रहे, आपका हसीन जहान ।
पाकर आप शशिप्रभा सम, निरमल सम्यग्दर्शन ।
सम्यक् की प्रभा संग तुम करो, स्व आत्मा के दर्शन।।6।।

गुरुवर का जन्मदिन (गीत)

–साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.

(तर्ज- चाहा है तुमको)

गुरुवर का आया है, जन्मदिन महान्।
हिल मिल के गाएं, हम गुरुवर के गुणगान।
पारसमणि जैसे, गुरुवर ये निराले हैं।
मीठे वचन जिनके, अमृत के प्याले हैं।
सूरत सुहानी है, मन को लुभानी है।
शरणे रहे हम हरदम, भाव की रवानी है।।टेर।।
गुरुवर का आया...
मोकलसर पावन, पारस बगिया है प्यारी।
रोहिणी माता है, केसर की क्यारी।
लुंकड़ कुल में, चांद से जनमें, हरखे जन मन में।
झूमे नाचे गाए सारे, खुशियों की होली है।
देते बधाई तुमको, सजाई रंगोली है।।1।।
गुरुवर का आया...
महका है मधुबन, महकी आज फिजाएं हैं।
गाये हम मंगल, गीत ऋचाएँ हैं।
भाव से वंदन, करें अभिनंदन, मोकलसर नंदन।
सूरज चांद सितारे, देते बधाई हैं।
खुशियों का आया सावन, बजे शहनाई है।।2।।
गुरुवर का आया...
प्रेम के सागर हो तुम, स्नेह की सरिता हो।
प्रज्ञा के उत्तुंग हिमगिरि, तुम ही गीता हो।
तुम ही माता, तुम ही भ्राता, तुम ही त्राता हो।
सारथी धर्मसंघ के, आगम के ज्ञाता हो।
खरतरगच्छ के तुम तो, भाग्यविधाता हो।।3।।
गुरुवर का आया...
चरणों में आई देने, भावों का उपहार।
श्रद्धा भक्ति के, मोती करो स्वीकार।
'शासन' अंबर, चमको सूरिवर, चमके ज्यों दिनकर।
'विद्युत्' बहना आई, भावों का थाल लाई।
चरणों की चेली 'नीला', मंगल दे बधाई।।4।।
गुरुवर का आया...

श्री अवन्ति तीर्थ

अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ प्रतिष्ठा कवित्त

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

(तर्ज- भला किसी का...)

तीर्थ अवन्ति पार्श्वनाथ की पूरे जग में है ख्याति।
लोग हजारों आते पाते अपने जीवन में शांति।।1।।
जीर्णोद्धार हुआ है सुन्दर शोभ रहा उत्तुंग शिखर।
नलिनीगुल्म विमान लगे ऐसा अद्‌भुत प्रभु का मन्दिर।।2।।
देखे तो रह जाए देखते मण्डप रंग विशाल बना।
विस्मय से चौड़ी आंखें सोचे यह सच्चा या सपना।।3।।
आई प्रतिष्ठा की शुभ मंगल घड़ियां मंगल घंट बजा।
तोरण द्वार लगे घर-घर में प्रभु का मन्दिर खूब सजा।।4।।
बने संयोजक कौन यहाँ, चिंतन करती विद्युत् बहिना।
हर दृष्टि से योग्य चतुर दे पूर्ण समय दिन निशि महिना।।5।।
मोकलसर के कुशलराजजी काम कुशल करने वाले।
धार लिया जो काम हाथ में वह पूरण करने वाले।।6।।
योग्य दृष्टि ने योग्य व्यक्ति का योग्य समय पर योग किया।
एक अनूठे दृष्टिकोण संग अभिनव वर आयाम दिया।।7।।
संयोजक पद देकर दी प्रतिष्ठा की जिम्मेदारी।
तन मन धन से खूब निभाई खिली संघ की फुलवारी।।8।।
पूरण पुरुषारथ से अपने सफल किया उत्सव सारी।
चिहुं दिशि जग जस फैला डंका खरतरगच्छ बजा भारी।।9।।
लोग हजारों आये देखे डाले दांत तले अंगुली।
सुन्दर अतिसुन्दर थी व्यवस्था उड़े कहीं पर ना धुली।।10।।
खाना रहना मंडप उत्सव गीत संगीत नगीना था।
बाधाओं विघ्नों ने झटपट देश निकाला लीना था।।11।।
मुख्य शिखर पर लाभ ध्वजा का कुशल सुरज ने प्राप्त किया।
विपुल द्रव्य अर्पण कर अन्तर भक्ति का संदेश दिया।।12।।
उत्सव देखे हमने जग में, ऐसी रचना देखी ना।
हुई होगी प्रतिष्ठाऐं पर तीर्थ अवन्ति जैसी ना।।13।।

अभिनव चिंतन अभिनव सर्जन अभिनव इक इतिहास बना।
बारह वर्षों का संजोया वो साकार हुआ सपना।।14।।
सावन बरसा भादो गरजा कलियां खिल-खिल मुस्काई।
अन्तर वीणानाद हुआ जग में नव ज्योति प्रगटाई।।15।।
मुक्ति मनीष मयंक व मेहुल मलय श्रमण सानिध्य मिला।
मुनि मयूखप्रभ आगमरुचि का दीक्षा पा मन कमल खिला।।16।।
दिव्य सुलोचन सूर्य रतन विद्युत् प्रज्ञा युत विमलप्रभा।
कल्प संघ अभ्युदय आये श्रमणी मंडल ठाट लगा।।17।।
उच्च शिखर पर लहराई फहराइ ध्वजा नभ मंडल में।
गगन नाद गूंजा डूबा मन मंगलमय अमृत रस में।।18।।
मनमोहक परिकर में शोभे पार्श्व अवन्ति प्रभुवरजी।
आकर भक्त लगाता प्रभु के चरणों में अपनी अरजी।।19।।
संवत् दोय सहस पिचहत्तर माघ सुदि चौदस आई।।
स्वर्ण सूर्य का उदय हुआ ली कामधेनु ने अंगडाई।।20।।
जब तक सूरज चांद रहेगा तीर्थ अवन्ति नाम रहेगा।
पार्श्व अवन्ति प्रभु का शरणा, कान्ति मणिप्रभ सदा लहेगा।।21।।

खरतर सहस्राब्दी गौरव वर्ष आलेख

खरतरगच्छाचार्यों के उपकारों के प्रति कृतज्ञता

—प्रतापमल सेठिया

संसार को सन्मार्ग पर लाने तथा समाज को धार्मिक भावना के आधार पर समुन्नत बनाने का बहुत बड़ा श्रेय जैनधर्म के आचार्यों एवं क्रियानिष्ठ साधु-मुनिराजों को है। ऐसे आचार्यों तथा साधु-मुनिराजों में खरतरगच्छ के आचार्यों का नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय इसलिये है कि इस गच्छ के आचार्यों ने प्रारम्भ से ही जैनदर्शन के पवित्र सिद्धान्तों का समाज में व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है। ऐसे महान् आचार्यों का पुण्यस्मरण करना हमारा प्रथम एवं परम कर्तव्य है।

खरतरगच्छ, श्वेताम्बर जैन समाज का प्राचीन गच्छ है। आचार्य श्री जिनेश्वरसूरिजी एवं बुद्धिसागरसूरिजी को अपनी क्रियानिष्ठा तथा आचार-पालन की कठोर तत्परता के आधार पर चैत्यवासियों के साथ किये गये शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त करने के पश्चात् वि.सं. 1066 से 1078 के मध्य दुर्लभ राजा ने अपनी राज-सभा में अधिक 'खरतर' (सच्चे) देखकर इन्हें 'खरतर' की उपाधि से विभूषित किया। तभी से इस गच्छ का नामकरण 'खरतरगच्छ' हुआ। इस गच्छ में आचार्य श्री जिनेश्वरसूरिजी के शिष्य, 'संवेग रंगशाला' जैसे महत्त्वपूर्ण के ग्रंथ के रचयिता श्री जिनचन्द्रसूरिजी एवं नवांगी-वृत्तिकार के रूप में लब्धप्रतिष्ठ श्री अभयदेवसूरिजी हुए, जिनके द्वारा रचित 'जय तिहुअण' स्तोत्र की 17 वीं गाथा के प्रताप से भूगर्भ से स्तम्भन पार्श्वनाथ प्रगट हुए। इनके पट्टधरों के रूप में एक के पश्चात् एक प्रभावशाली आचार्यों की परम्परा में क्रमशः श्री जिनवल्लभसूरिजी, युगप्रधान श्री जिनदत्तसूरिजी, मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी तथा कतिपय अन्य पट्टधर आचार्यों के पश्चात् 14 वीं शताब्दी में श्री जिनकुशलसूरिजी एवं इनके 200 वर्षों के अनन्तर अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचन्द्रसूरिजी हुए। इन सब में प्रमुखरूप से श्री जिनदत्तसूरिजी, मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी, श्री जिनकुशलसूरिजी एवं अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचन्द्रसूरिजी, ये चारों आचार्य 'दादा' के नाम से प्रसिद्ध माने जाते हैं।

ऐसे महापुरुषों के प्रति, जिन्होंने जीवन पर्यन्त आत्मोद्धार के साथ ही समाजोद्धार के कई कार्य कर असंख्य-मानवों को सन्मार्ग पर लगाया, प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में श्रद्धा एवं आदर भावना होना स्वाभाविक है। यही कारण है कि भारतवर्ष के कोने-कोने में इन चारों दादा गुरुओं के पुण्यस्मारक विविध रूपों में निर्माण किये गये एवं आज भी किये जा रहे हैं, जिन्हें दादावाड़ी कहा जाता है। इन दादावाड़ियों में कहीं गुरु-प्रतिमाएँ हैं तो कहीं चरण-पादुकाएँ। इस प्रकार श्रद्धा की साकार रूप गुरुजनों की ये दादावाड़ियां हमारे जीवन को निरन्तर सत्य सिद्धान्तों की ओर प्रेरित करती रहती है।

दादावाड़ियों के ये पवित्र स्थान हमारे देश में कितने हैं एवं किस रूप में है, इसकी जानकारी होना प्रत्येक गुरुभक्त के लिये आवश्यक ही नहीं, अपितु उपादेय भी है। अतः इस पवित्र उद्देश्य की पूर्ति के लिए विगत कई वर्षों पहले 'श्री जिनदत्तसूरि सेवा संघ' के तत्वावधान में भारतवर्ष की दादावाड़ियों का परिचयात्मक संकलन कर 'दादावाड़ी दिग्दर्शन' नाम से पुस्तक रूप में प्रकाशित किया।

जैन समाज ही नहीं जैनेतर प्रत्येक समाज में गुरु का कम महत्त्व नहीं है। इस पर भी 'खरतरगच्छ' के आचार्यों-गुरुजनों ने तो लाखों मनुष्यों को जैनधर्म में दीक्षित कर सत्य-सिद्धान्तों से परिपूर्ण ऐसा सन्मार्ग-प्रदर्शित किया कि जिस पर चलकर 800 वर्षों के पश्चात् भी हम और हमारे अन्य-बन्धु अपना कल्याण कर रहे हैं। ऐसे गुरुजनों के पुण्यस्मारक-दादावाड़ियों की सही-सही जानकारी प्राप्त करना साधारण कार्य नहीं है।

हम सभी दादा गुरुदेवों के उपकारों की चिरस्मृति एवं कृतज्ञता हेतु उनके बताए मार्ग का अनुसरण करें। इसी में हमारी सफलता है। (-दादावाडी दिग्दर्शन पुस्तक से आंशिक संशोधन सहित साभार)

'अवन्ति तीर्थोद्धारक' उपाधि से सम्मानित किया

उज्जैन 20 मार्च। पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. को आज जन्मोत्सव के मध्य श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक मारवाड़ी समाज उज्जैन द्वारा 'अवन्ति तीर्थोद्धारक' उपाधि से विभूषित किया गया।

आर्य मेहुलप्रभसागरजी म. ने गच्छाधिपति गुरुदेवश्री का मिताक्षरी परिचय कराते हुए अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ की विगत 20 वर्षों की संक्षिप्त रूपरेखा बताई और कहा कि पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री इस तीर्थ के शास्त्रशुद्ध जीर्णोद्धार हेतु मारवाडी समाज को प्रेरणा एवं निरंतर मार्गदर्शन देने का भागीरथ कार्य निरंतर कर रहे है। साथ ही पिछले माह 18 फरवरी को हुए श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ के ऐतिहासिक प्रतिष्ठा महोत्सव ने संपूर्ण विश्व में अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ एवं उज्जैन की महिमा व गौरव को बढ़ाया है। इस उपलक्ष में मारवाड़ी समाज द्वारा रजतमय प्रशस्ति पत्र गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज को समर्पित कर उनके अतुलनीय पुरुषार्थ का अनुमोदन करते हुए सविनय कृतज्ञता प्रकट की। अवन्ति तीर्थोद्धारक उपाधि के प्रशस्ति पत्र का वांचन आशीष सुराणा ने किया।

उज्जैन में बड़ी दीक्षा संपन्न

उज्जैन नगर में अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ के विशाल रंगमंडप में पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवंति तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि विशाल साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में नवदीक्षित मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. एवं नवदीक्षिता साध्वी श्री आगमरुचिश्रीजी म. की बडी दीक्षा आवश्यक व मांडलिक योगों के साथ फाल्गुन सुदि 4 रविवार ता. 10 मार्च 2019 को शुभ मुहूर्त्त में संपन्न हुई।

पूज्य आचार्यश्री ने प्रारंभिक देववंदन आदि विधि करवाने के पश्चात् शुभ लग्न नवांश में पंच महाव्रत एवं छट्ठे व्रत का प्रत्याख्यान कराया।

इस अवसर पर पूज्यश्री ने छोटी दीक्षा व बडी दीक्षा का रहस्य समझाया। पाँच प्रकार के चारित्र की व्याख्या करते हुए सामायिक चारित्र व छेदोपस्थानीय चारित्र का वर्णन किया। श्रीसंघ ने अभिमंत्रित चावलों से नूतन दीक्षितों को बधाया। पूज्यश्री ने दिग्बंधन करते हुए पूरी पट्टावली का वर्णन कर नामकरण कर अपने संघ में उन्हें सम्मिलित किया।

श्री नंदुरबार नगरे

मुमुक्षु विजय कुमार (विक्की) कोचर

(सुपुत्र श्री गिरधारीलालजी-प्रमिलादेवी कोचर) के

भागवती दीक्षा निमित्ते

सकल श्रीसंघ को सादर आमंत्रण

पावन निश्रा
पू. गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

शुभ मुहूर्त
भव्य शोभायात्रा
वै. सुदि 5 गुरुवार ता. 9 मई 2019
प्रातः 8.00 बजे

• प्रव्रज्या विधान •
वै. सुदि 6 शुक्रवार ता. 10 मई 2019
प्रातः 7.00 बजे

सकल श्रीसंघ को पधारने का सदर निवेदन है।

निवेदक

श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, नंदुरबार की आज्ञा से
गुलाबचंद, जीवनलाल, कुशालचंद, मेघराज, अशोकचंद, प्रवीणकुमार
राजकुमार, रमेशकुमार, महावीर एवं समस्त कोचर परिवार

संपर्क सूत्र :
अजित कोचर 9822038725
प्रकाश कोचर 7770064600
महावीर कोचर 7020839694

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः
श्री गौतमस्वामिने नमः
दादा जिनदत्त–कुशलसूरिभ्यो नमः
पू. गणनायक श्री सुखसागरगुरुभ्यो नमः
श्री शांतिगुरुभ्यो नमः

श्री निमगुल नगरे

श्री पार्श्व कुशल शांति धाम तीर्थ

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनमंदिर, जिनकुशलसूरि दादावाडी एवं योगीराज शांतिगुरु मंदिर

के भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंगे

सादर

आमंत्रण

पावन निश्रा

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

पावन प्रेरणा व सानिध्य

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या एवं
पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की निश्रावर्तिनी
पूजनीया साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.

प्रतिष्ठा का भव्य वरघोडा

वि. सं. 2076 वैशाख वदि 13 गुरुवार,
ता. 2 मई 2019 प्रातः 8 बजे

प्रतिष्ठा

वि.सं. 2076 वैशाख वदि 14 शुक्रवार ता. 3 मई 2019 प्रातः 8 बजे

सकल श्रीसंघ से पधारने का हार्दिक अनुरोध है।

निवेदक

श्री पार्श्व कुशल शांति धाम ट्रस्ट

पो. निमगुल-425428 जिला- धुले, महाराष्ट्र

संपर्क : अध्यक्ष श्री रतनलालजी कोठारी, दोंडाइचा- 9422788286

परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव खरतर
श्री जिनमणिप्रभ

जन्म दिवस पर हार्दिक

श्रद्धावनत

- मोतीलाल ललवानी
- चुन्नीलाल संखलेचा
- हस्तीमल हुण्डिया
- रायचन्द छाजेड़
- ललित कुमार संखलेचा
- कान्तिलाल छाजेड़
- गौतम गोलेच्छा
- सुरेश ललवानी
- विक्रमसिंह ड्ढ्डा
- प्रवीन संखलेचा
- रानमल बोकड़िया
- प्रशांत श्रीश्रीमाल
- बाबुलाल ललवानी
- रतन बोथरा
- भरत छाजेड़
- दयालजी झाबक
- जसराज बाफना
- पारसमल मरडिया
- ललित बी. संखलेचा
- रमेश पारख
- अशोक छाजेड़
- अशोक संखलेचा
- मिठालाल बाफना
- विकास गोलेच्छा
- श्रवण संखलेचा
- बाबूलाल संखलेचा
- कान्तिलाल संखलेचा
- भिखचन्द गोलेच्छा
- ओमप्रकाश हुण्डिया
- भंवरलाल छाजेड़
- जुगराज संखलेचा

रगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

सूरीश्वरजी म.सा.

को

अभिनंदन...वर्धापना...

श्री खरतरगच्छ जैन संघ हैदराबाद

अध्यक्ष
हस्तीमल हुण्डिया

मंत्री
ललित संखलेचा

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद ,हैदराबाद शाखा

अध्यक्ष
रमेश संखलेचा

मंत्री
प्रशांत श्रीश्रीमाल

भारत की नवीनतम और अत्याधुनिक

3D - 4D - 5D सोनोग्राफी

कुशल

इमेजिंग एण्ड डायग्नोस्टिक सेन्टर

डॉ. गुलाब छाजेड़ (मरुधर में हरसाणी - बाड़मेर)

MBBS, DMRD (Madras Medical College, Chennai)
DNB : Radio-Diagnosis (KMCH, Coimbatore)

सोनोग्राफी एवं रेडियोलोजी विशेषज्ञ

सोनोग्राफी (General & HD Sonography)

- पेट सम्बन्धित सामान्य व रंगीन सोनोग्राफी
- अत्याधुनिक उच्च आवृति (High Frequency) सोनोग्राफी
- आंखों, थाईरोइड, गर्दन, वृषणकोष, हर्निया, स्तन
- मस्तिष्क, मांस पेश एवं ज्वाईन्ट (कलाई, कंधा, घुटना, टखना आदि)

गर्भस्थ शिशु की सोनोग्राफी (Pregnancy Scan)

- 2-3 माह में प्राथमिक जांच (Early Pregnancy Scan)
- 3-4 माह में माध्यमिक जांच (NT Scan)
- 5-6 माह में 3D-4D द्वारा संपूर्ण जांच (Anomaly Scan)
- विशिष्ट हृदय जांच 5D टेक्नोलोजी द्वारा (Fetal Echocardiography)
- 7-9 माह में वृद्धि एवं रंगीन जांच (Growth/Color Doppler Scan)

रंगीन सोनोग्राफी (Color Doppler)

- हाथ-पांव के धमनियों की रंगीन जांच (Arterial-Vencus Doppler)
- उच्च रक्तचाप (BP) की रंगीन जांच (Renal Doppler Scan)
- मस्तिष्क को जाने वाली धमनियों की जांच (Carotid Doppler)
- डायलिसिस संबन्धित रंगीन जांच (AVF & Transplant Doppler)

स्त्री रोग संबन्धित सोनोग्राफी (Womens Imaging)

- बिना दूरबीन के प्राथमिक जांच (TAS)
- दूरबीन द्वारा बच्चेदानी एवं अंडकोष की संपूर्ण जांच (TVS)
- निःसंतान संबधित जांच (Follicle Study)
- स्तन रोग जांच (Breast Ultrasound)

बिजापुर बस स्टेण्ड के पीछे, सिद्धि विनायक हॉस्पिटल के सामने, जवाई बांध रोड़, सुमेरपुर, जिला-पाली

फोन नं. 02933-253357, 9461520151, 8107336812

खरतरगच्छाधिपतिश्री का जन्मोत्सव मनाया

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. का 59वां जन्मोत्सव मानव सेवा, आयंबिल, उपवास आदि तपस्या एवं गुणानुवाद कर मनाया गया। स्थानीय छोटा सराफा स्थित श्री शांतिनाथ मांगलिक भवन में प्रात: 10:00 बजे हुई गुणानुवाद सभा में सर्वप्रथम मंगलाचरण कर विश्व-शांति की कामना की गई।

जन्मोत्सव की रूपरेखा बताते हुए मुनि मनीषप्रभसागरजी एवं आर्य मेहुलप्रभसागरजी ने धर्म सभा में उपस्थित गुरुभक्तों को गुरु तत्त्व की महिमा बताई। उन्होंने कहा कि गुरु तत्त्व का जीवन में होना अतिआवश्यक है, बिना गुरु के इतिहास का प्रत्येक पात्र अधूरा है। गुरु ही हमें सच्चा मार्ग दिखाते हैं।

नवदीक्षित मुनि मयूखप्रभसागरजी ने गुरु-कृपा का फल बताते हुए धर्मसभा को बताया कि गुरु-कृपा अमोघ अस्त्र है। कितनी ही विघ्न-बाधाएं हों, अगर गुरु-कृपा मिल जाए तो बिगड़ने वाले कार्य भी संवर जाते हैं। संचालन करते हुए बहिन म. डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभाश्रीजी ने कहा कि पूज्य गुरुदेव की सहजता, समाधि और स्थितप्रज्ञता अनिर्वचनीय है। अनेक घटनाओं को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने बचपन से आज तक की जीवन यात्रा का मार्मिक चिंतन प्रस्तुत किया। एवं बधाई देते हुए उनसे सीख लेने की प्रेरणा दी।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए पूज्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज ने फरमाया कि मेरे जीवन में सर्वप्रथम उपकार माता-पिता का है जिन्होंने मुझे जीवन दिया। उनके लिए मैं कृतज्ञ हूँ। दूसरा उपकार मेरे गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी महाराज का है, जिन्होंने असीम स्नेह के साथ मेरे जीवन को सही दिशा दी। आज मेरे जीवन में जो कुछ भी प्रशंसनीय है वह सब उन्हीं की कृपा का परिणाम है। सभी श्रावक-श्राविकाओं को जन्मोत्सव पर आशीर्वाद देते हुए गच्छाधिपतिश्री ने फरमाया कि आप सभी ने जो अपनी अभिव्यक्तियां दी है, उन सभी अभिव्यक्तियों को मैंने सहज भाव से श्रवण किया है। आप सभी की भावनाओं पर खरा उतरने का पुरुषार्थ करूंगा। अनेक साध्वीजी भगवंतों ने भी अपने उद्‌बोधन देते हुए गुरुदेव को बधाई प्रेषित की।

जन्मोत्सव के प्रारंभ में ज्ञानवाटिका के बालकों द्वारा नाटिका की प्रस्तुति दी गई। बालिकाओं द्वारा बधाई गीत गाते हुए गच्छाधिपतिश्री को वर्धापना समर्पित की गई। श्री पुखराजजी चोपडा, श्री आशीष सुराणा, सौ. मीना बैद, सौ. बिन्दु डागा, सुश्री स्नेहा सावनसुखा आदि ने गुरुदेव को वंदना करते हुए बधाई दी।

इस जन्मोत्सव समारोह में उज्जैन श्रीसंघ सहित अहमदाबाद, मुंबई, बाड़मेर, देपालपुर, इंदौर, रिंगणोद, नीमच, निंबाहेड़ा, कोटा, जयपुर आदि अनेक नगरों से गुरुभक्तों ने शिरकत की।

जन्मोत्सव के निमित्त दिनांक 19 मार्च को श्री शांतिनाथ मांगलिक भवन में श्री पूनमचंदजी अशोककुमारजी कोठारी परिवार उज्जैन द्वारा स्वामीवात्सल्य का लाभ लिया गया। साथ ही श्री विजयचंदजी अजेशकुमारजी कोठारी परिवार की ओर से 60 किलो लड्डुओं की प्रभावना की गई।

सुदीर्घ कविता को गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रॅकोर्ड में स्थान

पूज्य गुरुदेव अवन्ति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर महाराज के जीवन के विभिन्न आयामों पर लिखित व्यक्ति विशेष पर लिखी गई विश्व की सबसे लंबी कविता को विश्वप्रसिद्ध 'गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रॅकोर्ड' में सम्मिलित किया गया।

सुदीर्घ कविता की लेखिका मुम्बई निवासी प्रोफेसर डॉ. ललिता बी. जोगड़ के द्वारा लिखित कविता की प्रतिलिपि एवं गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रॅकोर्ड का प्रमाण-पत्र की प्रति श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ जैन श्वे. मू.पू. मारवाडी समाज उज्जैन के अध्यक्ष श्री हीराचंदजी छाजेड, उपाध्यक्ष श्री निर्मलकुमारजी सकलेचा, महामंत्री श्री चंद्रशेखरजी डागा, महेन्द्रजी गादिया, मुम्बई से पधारे श्री जीवराजजी श्रीश्रीश्रीमाल, हीरालालजी कानुंगो, इन्दौर से पधारे दीनेशजी हुण्डिया, अनिलजी बैद आदि ने समर्पित किया।

1291 पंक्तियों की सुदीर्घ कविता-लेखन की घटना विरल है। धर्मसभा में उपस्थित सभी गुरुभक्तों ने ललिताजी जोगड के प्रयासों का अनुमोदन किया।

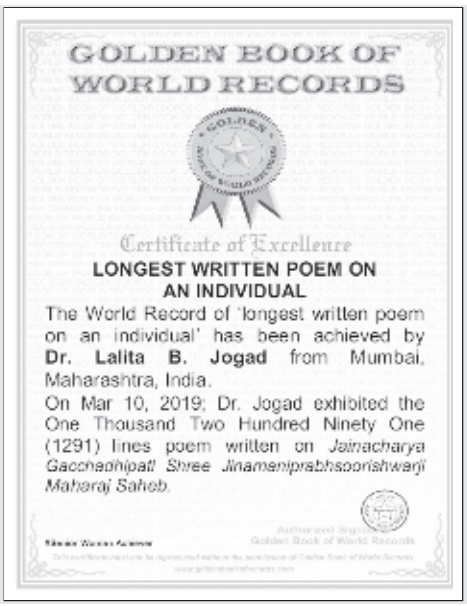

GOLDEN BOOK OF WORLD RECORDS

Certificate of Excellence

LONGEST WRITTEN POEM ON AN INDIVIDUAL

The World Record of 'longest written poem on an individual' has been achieved by **Dr. Lalita B. Jogad** from Mumbai, Maharashtra, India.

On Mar 10, 2019; Dr. Jogad exhibited the One Thousand Two Hundred Ninety One (1291) lines poem written on *Jainacharya Gacchadhipati Shree Jinamaniprabhsoorishwarji Maharaj Saheb.*

मानव सेवा के विभिन्न कार्य

जन्मोत्सव के उपलक्ष में मानव सेवा के विभिन्न कार्य किए गए। खारा कुआं स्थित जीवनदीप वेलफेयर सोसाइटी फिजियोथेरेपी सेंटर में फिजियोथेरेपी हेतु मशीनें एवं उपकरण प्रदान किए गए। स्थानीय जिनेश्वर युवा परिषद ने मेडिकल सेवा हेतु अपना विशिष्ट अनुदान भी संस्था को अर्पण किया।

कल्याणपुरा पार्श्वनाथ जिनालय, बाड़मेर की पंचम वर्षगांठ सम्पन्न

बाड़मेर 11 मार्च। बाड़मेर के श्री कल्याणपुरा उपनगरे श्री पार्श्वनाथ जिनमंदिर की पंचम वर्षगांठ दिनांक 11 मार्च 2019 को हर्षोल्लास व धुमधाम के साथ मनाई गयी। वर्षगांठ के मंगलमय अवसर पर पूज्य गुरूदेव अंचलगच्छाचार्य श्री कलाप्रभसागरसूरीश्वरजी म. के शिष्य पूज्य मुनि श्री आर्यरत्नसागरजी म. एवं पूज्य गुरूदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. व पूज्या साध्वी श्री तीर्थगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा व विधिकारक सुनिलकुमार झालमोरा एवं उदय पंडितजी मार्गदर्शन तथा चतुर्विध संघ की साक्षी में प्रातः 08:00 बजे अठारह अभिषेक विधान, प्रातः 10 बजे श्री सत्तरभेदी पूजन तथा विजयमुहूर्त में मन्त्रोचार व जयकारों के साथ कायमी ध्वजा के लाभार्थी परिवार शा. गोरधनमलजी प्रतापमलजी मालोणी रांका सेठिया परिवार धोरीमन्ना द्वारा ढोल ढमाके के साथ झूमते-नाचते जिनालय की शिखर पर ध्वजारोहण किया गया।

उसके बाद मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान की आरती व मंगल दीपक किया गया। तत्पश्चात शान्ति कलश का विधान लाभार्थी परिवार जगदीशजी रीखबदासजी सेठिया परिवार, बाड़मेर द्वारा सम्पन्न किया गया। तथा श्री अशोक बोथरा आदि द्वारा भक्तिगीतों की प्रस्तुतियां दी गयी।

वर्षगांठ के मंगलमय अवसर पर परमात्मा की आकर्षक अंगरचनाएँ तथा जिनालय की रंगीन रोशनी व फूलों द्वारा भव्य सजावट की गयी तथा इस मंगलमय शुभ दिवस पर सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़कर भाग लेते हुए परमात्मा की भक्ति की।

-रविकुमार सेठिया

सिलचर में शासन प्रभावना

सिलचर(आसाम) 11 मार्च। पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी की आज्ञानुवर्तिनी एवं पू. गणिनीपद विभुषिता गुरुवर्याश्री सुलोचनाश्रीजी म. पू. तपोरत्ना साध्वी सुलक्षणाश्रीजी म. की सुशिष्या आसाम प्रभाविका पू. साध्वी प्रियस्मिताश्रीजी म., ओजस्वी वक्ता पू. साध्वी डॉ. प्रियलताश्रीजी म., पू. साध्वी डॉ. प्रियवंदनाश्रीजी म., पू. साध्वी प्रियप्रेक्षांजनाश्रीजी म., पू. साध्वी प्रियदर्शांजनाश्रीजी म., पू. साध्वी प्रियचैत्यांजनाश्रीजी म. की पावन निश्रा में ठाणा 35वां दीक्षा दिवस फाल्गुन सुदि चौथ को श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ के तत्वावधान में आयोजित किया गया।

संयम अनुमोदनार्थ पंचदिवसीय अनुष्ठान में ता. 11 मार्च को प्रातः चारित्र वंदनावली एवं प्रभु-भक्ति का आयोजन में मोहनजी गुलेच्छा चैन्नई द्वारा प्रस्तुति दी गई। ता. 12 मार्च को प्रातः पुद्गल वोसिरामि विधि, ता. 13 मार्च को 108 पार्श्व-पद्मावती महापूजन, ता. 14 मार्च को श्री लब्धि निधान गौतमस्वामी महापूजन, ता. 17 मार्च को श्री दादा गुरुदेव महापूजन, ता. 20 मार्च को गुप्त एकासणा, ता. 24 मार्च को दादागुरुदेव पूजा आदि विविध आयोजन किए गए। जिसमें समस्त सिलचर वासियों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

सामूहिक आयंबिल का आयोजन

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री के जन्मोत्सव के उपलक्ष में उज्जैन नगर में श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ जैन श्वे. मारवाडी समाज ट्रस्ट के तत्वावधान में आयंबिल तप का आयोजन किया गया।

यहाँ बिना नमक के शुद्ध आयंबिल करवाया गया, इसमें 80 से ज्यादा लोगों ने हिस्सा लेकर एक दिन के लिए अपनी रसनेन्द्रिय को साधने का प्रयास किया। आयंबिल तप की आराधना का लाभ श्री डॉ. श्यामसुन्दरजी, डॉ. सदाशिवजी पारीख परिवार ने लाभ लिया।

यह समाचार जिनेश्वर युवा परिषद, उज्जैन के रितेश मेहता एवं तरुण डागा ने दिए।

पूज्य गच्छाधिपतिश्री के विहार की संभावित सूचना

पूज्य गच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. पूज्य बालमुनि श्री मलयप्रभसागरजी म., नवदीक्षित पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. उज्जैन स्थित श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ से ता. 1 अप्रेल 2019 को विहार कर ता. 3 अप्रेल को मक्षी पधारेंगे। वहाँ से विहार कर ता. 7 अप्रेल तक इन्दौर पधारेंगे। वहाँ से दो दिन की स्थिरता के पश्चात् विहार बडवाह पधारेंगे। वहाँ से विहार कर खल्घाट, सेंधवा, पानसेमल, खेतिया, शहादा, सारंगखेडा होते हुए निमगुल पधारेंगे। जहाँ उनकी पावन निश्रा में पू. साध्वीवर्या समयग्दर्शनाश्रीजी म. की पावन प्रेरणा से निर्मित श्री पार्श्व कुशल शांतिधाम तीर्थ की प्रतिष्ठा ता. 3 मई 2019 को संपन्न होगी।

वहाँ से विहार कर पूज्यश्री दोंडाइचा होते हुए घोटाणे पधारेंगे जहाँ पूजनीया गणिनी प्रवरा साध्वीवर्या श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित विहार धाम का उद्घाटन ता. 5 मई 2019 को होगा। वहां से नंदुरबार की ओर विहार करेंगे, जहां उनकी निश्रा में वर्षीतप पारणा दि. 7 मई को एवं मुमुक्षु विजय कोचर की भागवती दीक्षा दि. 10 मई 2019 संपन्न होगी।

खरतरगच्छ श्री संघ इंदौर के चुनाव संपन्न

इन्दौर 16 मार्च। खरतरगच्छ श्री संघ इंदौर की 3 वर्ष की आगामी कार्यकारिणी (वर्ष 2019-22)का गठन चुनावी प्रक्रिया के माध्यम से निर्विरोध संपन्न हुआ।

अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्रजी मेहता, निवृतमान अध्यक्ष श्री जितेंद्रजी सेखावत, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री सुरेशजी डोसी व श्री सुजानजी चोपड़ा, सचिव श्री राजेन्द्रजी नाहर, सहसचिव श्री निलेशजी बापना, कोषाध्यक्ष श्री कमलेशजी पारख, प्रचार सचिव श्री योगेन्द्रजी सांड, सांस्कृतिक संयोजक श्रीमती आशा कोठारी व श्री संजयजी छाजेड़, मानव सेवा संयोजक श्री निर्मलजी ठाकुरिया व श्री सतीशजी हुंडिया, साधु साध्वी वेयावच्च समिति श्री मनोहरजी लोढ़ा व श्री मनोहरजी सुराणा, कार्यकारिणी सदस्य श्री हेमंतजी मालू, श्री नरेंद्रजी रांका का मनोनयन किया गया।

चुनाव अधिकारी श्री रजनीशजी चोरडिया ने यह जानकारी दी।

बालिका संस्कार शिविरों का आयोजन

इन्दौर : इन्दौर 29 अप्रेल। श्री जैन श्वे. मू.पू. खरतरगच्छ श्री संघ इंदौर के तत्त्वावधान में महत्तरावर्या श्री मनोहरश्रीजी म. की सुशिष्या पू. साध्वीवर्या संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में 10 वर्ष से अधिक उम्र की बालिकाओं के लिए धार्मिक शिविर का आयोजन किया गया है। यह आयोजन महावीर बाग इंदौर में 29/4/19 से 5/5/19 तक लगाया जा रहा है। प्रवेश लेने वाली बालिकाओं को 28/4/19 तक इंदौर पहुंचना होगा। इच्छुक बालिकाएं शिविर हेतु अपना नाम लिखावें।

सूरत : सूरत 26 मई। सूरत शहर के (लब्धिधाम बलेश्वरसमीपे) अवध संग्रीला परिसर में अखिल भारतीय सदा कुशल सेवा समिति द्वारा अष्ट दिवसीय आवासीय कन्या संस्कार शिविर आयोजित है। यह शिविर दि. 19 मई से दि. 26 मई तक रहेगा। 14 से 28 वर्ष की बालिकाएं लाभान्वित हो सकेगी।

यह आयोजन पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी एवं पू. पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गणिनीपद विभूषिता श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. सुशिष्या पू. साध्वी डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म., पू. प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में होगा। इच्छुक बालिकाएं शिविर हेतु अपना नाम यथाशीघ्र लिखावें।

तेन्नंपट्टू में पंचम वर्षगांठ का आयोजन

तेन्नंपट्टू 26 मार्च। तमिलनाडु के वेल्लुर जिलान्तर्गत श्री तेनम्पट्टू नगर के श्री पार्श्व-कुशल अभिनव तीर्थधाम के पावन परिसर में अतिप्राचीन चमत्कारिक श्री पार्श्वनाथ जिनप्रासाद की पंचम वर्षगाँठ आयोजित की गई।

पूजनीया प्रखर व्याख्यात्री श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी प्रियंवदाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी शुद्धांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में दि. 26.3.2019 को स्नात्र महोत्सव, जीवदया के कार्य, सत्तरभेदी पूजा पढाकर ध्वजारोहण किया गया।

तिरुपत्तूर एवं आम्बूर समीपस्थ तेन्नंपट्टू नामक ग्राम में अतिप्राचीन पार्श्वनाथजी एवं धरणेन्द्रदेव की दो मूर्ति विराट् वट वृक्ष के नीचे तिरुपत्तूर में राजकुमारी कोचर व गौतमचन्दजी कवाड़ को स्वप्न में दर्शन एवं संकेत मिला। तिरुपत्तूर के श्रद्धालुओं ने गाँव वालों से बात करके, मात्र 41 दिन में तिरुपत्तूर के ३ श्रद्धालु परिवार और आम्बूर के एक श्रद्धालु परिवार ने मिलकर इस मंदिर का निर्माण करवाकर पूज्य मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि ठाणा की निश्रा में प्रतिष्ठा करवाई। यहाँ ठहरने तथा भोजन आदि की व्यवस्था है।

यहाँ की विशेषताएँ...

यहाँ के तमिल 6 परिवार सम्पूर्ण शाकाहारी बनकर रोज पक्षाल पूजा, स्नात्र पूजा, सामायिक, शाम की आरती आदि सब वे ही करते है। दीपा नाम की एक महिला मात्र एक साल में पंच प्रतिक्रमण, भक्तामर, ऋषिमण्डल, कल्याण मन्दिर, शत्रुंजय रास, गौतम रास आदि सब सीखकर रोज स्वाध्याय करती है। सुबह, शाम प्रतिक्रमण और रात्रि भोजन का भी त्याग है।

दीपा एवं सवीता ये दोनों महिलाएँ और बाकी सब लोग मिलकर हर रोज श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा, श्री सत्तरभेदी पूजा, अन्तरायकर्म निवारण पूजा, वेदनीयकर्म निवारण पूजा, श्री नवपद पूजा, दादागुरुदेव की पूजा आदि में से कोई न कोई एक पूजा, हर रोज करीबन 27 महिनों से पढ़ाते हैं। कोई भी श्रद्धालुओं को कोई भी पूजा पढ़ानी हो तो यहाँ लाभ ले सकते है। दीपा तमिल बच्चों को हिन्दी और धार्मिक भी सिखाती है। प्रति पूनम को तीर्थांगण में मेला लगता है। उस दिन पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजा एवं नवकारसी का आयोजन भी होता है। भक्तों की मनोकामना दर्शन मात्र से पूर्ण होती है।

यह तीर्थस्थल तिरूपातूर से 37 कि.मी., वानियमबाड़ी से 12 कि.मी., आम्बूर से 9 कि.मी., पेरनामपेट से 25 कि. मी. की दूरी पर हैं।

हुब्बल्ली में मुमुक्षु का अभिनंदन

हुब्बल्ली 4 मार्च। में नंदुरबार निवासी मुमुक्षु श्री विजयकुमार गिरधारीलालजी कोचर का अभिनंदन किया गया। अभिनंदन सभा में श्री पुखराजजी कवाड़ ने मुमुक्षु का परिचय कराया। श्री आदिनाथ जिनमंदिर व दादावाडी ट्रस्ट की ओर से मोहनलालजी बाफना, प्रकाशजी छाजेड और मोहनलालजी कांकरिया ने मुमुक्षु का तिलक, माला, अभिनंदन पत्र द्वारा सम्मान किया।

इस अवसर मुमुक्षु ने अपने उद्‌गार व्यक्त कर दीक्षा महोत्सव में पधारने का निवेदन किया। केयुप हुब्बल्ली शाखा के सचिव ने सभी का आभार प्रकट किया।

संघवी कुशलराजजी गुलेच्छा का सम्मान

बंगलूरु। श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ प्रतिष्ठा महोत्सव समिति के संयोजक संघवी कुशलराज गुलेच्छा का जैन ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स द्वारा वहां के सर्वोच्च सम्मान से अभिनन्दन किया गया। जे.जी.आई. के चेयरमैन चैनराज छाजेड़ ने कुशलराज गुलेच्छा की असाधारण नेतृत्व क्षमता की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने पूरे देश में विख्यात अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ के प्रतिष्ठा महोत्सव में 2000 कार्यकर्ताओं, कर्मचारियों का नेतृत्व करते हुए महोत्सव में उमड़े करीब एक लाख श्रद्धालुओं के अतिविशाल आयोजन की सुन्दरतम व्यवस्था कर इतिहास रचा है जिस पर पूरे जैन समाज को नाज है।

श्री कुशलराज गुलेच्छा ने कहा कि जिनेश्वर परमात्मा की कृपा एवं आचार्य देव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. आदि गुरुदेवों के मार्गदर्शन एवं पूर्ण आशीर्वाद से ही वे पूरे देश में विख्यात इस विशाल महोत्सव को सुचारु रूप से संचालित करने में सक्षम बने। आयोजन से सम्बंधित करीब 70 से अधिक विभिन्न कार्यों को संचालन करने के लिए सभी का भरपूर साथ मिला, तभी यह आयोजन ऐतिहासिक बन सका है। यह प्रतिष्ठा महोत्सव उनके जीवन का सबसे सौभाग्य है। इस अवसर पर स्वामित्वा ग्रुप के डायरेक्टर महावीर मेहता ने कहा कि कुशलराज गुलेच्छा ने संयोजक के रूप में जैन समाज के इस अनुपम आयोजन को भव्य रूप से सफल बनाकर एक महानायक की छवि बनायी है जिस पर जैन समाज गौरव का अनुभव कर रहा है।

पार्श्वमणि तीर्थ की ग्यारहवीं वर्षगांठ आयोजित

पेद्दतुम्बलम् 1 मार्च। दक्षिण भारत के प्रसिद्ध श्री पार्श्वमणि तीर्थ की ग्यारहवीं वर्षगांठ हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

प्रात: सत्तरभेदी पूजा, दोपहर विजय मुहूर्त में ध्वजारोहण, आंगी एवं पूरे दिन के स्वामीवात्सल्य के लाभार्थी स्व. श्रीमती बदामीबाई सुरेशकुमारजी शीवलालजी, कालन्द्री-आदोनी निवासी रहे।

दिनांक 6 मार्च को दादा श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म. का दादा गुरु मेला भी आयोजित हुआ, जिसमें विशाल संख्या में गुरुभक्तों की उपस्थिति रही।

पार्श्वमणि तीर्थप्रेरिका गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. सा. की प्रेरणा से निर्मित इस तीर्थ की भव्यता में दिन-प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। वर्षगांठ समारोह में पू.सा.श्री अनुपमदर्शिताश्रीजी म. की शिष्या अखंड ११३१ आयंबिल के तपस्वीरत्ना पू.सा.श्री काव्यदर्शिताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का सांनिध्य प्राप्त हुआ।

यह तीर्थ पूरे दक्षिण भारत के जैनों की आस्था का केन्द्र बन चूका है। यहाँ प्रतिदिन अनेक भक्तगण आकर अत्यंत चमत्कारी श्री पार्श्वमणि पार्श्व प्रभु के दर्शन कर अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

दादा श्री जिनकुशलसूरिजी म. का स्वर्गारोहण महोत्सव आयोजित

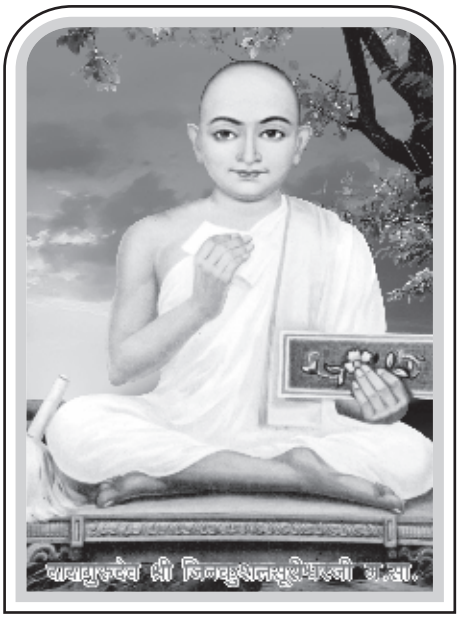

रायपुर

रायपुर 6 मार्च। रायपुर में तृतीय दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी म. के 686वें स्वर्गारोहण महोत्सव पर भव्य पालकी यात्रा का आयोजन बाजे-गाजे के साथ जैन मंदिर सदर बाजार से जिनकुशलसूरि दादाबाड़ी तक किया गया। जिसमें संघ ने भारी संख्या में उत्साह से लाभ लिया। तत्पश्चात अध्यात्मयोगी पू. मुनिवर्य श्री महेंद्रसागरजी म. के शिष्य पू. मुनि श्री विराटसागरजी म. आदि ठाणा की निश्रा में गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ। उपरांत नवकारसी की व्यवस्था भी रखी गयी। दोपहर में गुरुदेव की बड़ी पूजा एवं क्रमश रात्रि में भक्ति का आयोजन भी रखा गया।

समारोह के प्रमुख लाभार्थी नवकार परिषद रहे एवं सहयोगी के रूप में ऋषभदेव मंदिर ट्रस्ट एवं खरतरगच्छ युवा परिषद रायपुर का मुख्य योगदान रहा।

हैदराबाद

हैदराबाद 6 मार्च। खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्रीजिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा से एवं आचार्य श्री अरविंदसागरसूरीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी म. की 686वीं पुण्यतिथि श्री महावीरस्वामी जैन श्वेताम्बर संघ के तत्वावधान में खरतरगच्छ जैन श्री संघ फीलखाना एवं खरतरगच्छ युवा परिषद हैदराबाद शाखा द्वारा मनाई गई।

पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में सुबह महावीरस्वामी मन्दिर से गाजे-बाजे के साथ प्रभात फेरी निकाली गयी, जिसमें बड़ी संख्या में गुरुभक्तों ने हिस्सा लिया और जयकारों के साथ गुरु के प्रति अपनी भाव भक्ति व्यक्त की। गुरुदेव की बड़ी पूजा, गुरु प्रसादी का आयोजन भी किया गया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का आयोजन केयुप हैदराबाद शाखा द्वारा किया गया, जिसमें श्री जिनेश्वर मंडल, श्री जिनदत्त मण्डल, श्री वीर मण्डल, श्री अरिहन्त आरती मण्डल, श्री महावीर संगीत महिला मण्डल, श्री ऋषभ बालिका मण्डल का सहयोग रहा।

खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष हस्तीमल हुंडिया, मंत्री ललित संकलेचा, चुन्नीलाल संकलेचा, बाबूलाल संकलेचा, सूरजमल देवड़ा धोका, केयुप के प्रदेशाध्यक्ष रमेश संकलेचा, मंत्री प्रशांत जैन, रमेश पारख, अशोक संकलेचा सहित बड़ी संख्या में गुरुभक्तों ने लाभ लिया।

नीमच

नीमच 6 मार्च। कलिकाल कल्पतरु, प्रकट प्रभावी तृतीय दादा श्री जिनकुशलसूरि गुरुदेव के 686 वें स्वर्गारोहण दिवस पर श्री आदिनाथ जिनालय एवं जिनकुशलसूरि खरतरगच्छ जैन दादावाड़ी नीमच में दोपहर में दादा गुरुदेव की बड़ी पूजा का आयोजन खरतरगच्छ युवा परिषद नीमच शाखा व श्री जिनकुशल महिला मंडल नीमच द्वारा किया गया।

दादा गुरुदेव की पूजा के लाभार्थी श्री रिखबचंदजी अजितकुमारजी गोलिया परिवार थे।

इस अवसर पर युवा परिषद के अनेक सदस्य उपस्थित थे। पूजा के पश्चात दादा गुरुदेव की आरती की गई व इसके बाद सभी उपस्थित जनों के लिए स्वल्पाहार का आयोजन रखा गया। शाम को 7.30 बजे पारस इक्तीसा व दादागुरु के इक्तीसा के पाठ का आयोजन किया गया व दादा गुरुदेव की 108 दीपक की आरती की गई जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

उदयपुर

उदयपुर 6 मार्च। दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी महाराज की 686वीं पुण्यतिथि विराट कार्यक्रम के रूप में मनाई गई। चेटक दादावाड़ी में विजयमुहूर्त में नवकार मंत्र के जाप के साथ इकतीसा पाठ किया गया। तत्पश्चात बड़े साजन सभा के अध्यक्ष श्री किरणमल सावनसुखा परिवार ने दादा गुरुदेव की बड़ी पूजा 11 पूजाओं के साथ बड़े हर्षोल्लास के साथ नाचते गाते संपन्न कराई । इस 686वीं पुण्यतिथि पर सैकड़ों भक्तों ने मनमोहक स्तवन व नृत्य प्रस्तुत किए साथ ही गुरुदेव के चरणों में वासुपूज्य दादा भक्ति मंडल द्वारा कई गीतिका प्रस्तुत की गई। अंत में सामूहिक आरती की गई।

कार्यक्रम में गरिमामय उपस्थिति के रूप में पूर्व सचिव अनिल कोठारी, रिटायर्ड जज गोवर्धनसिंह सुराणा, खड़गसिंह हिरण, गजेंद्र सुराणा, राजेंद्र बाफना व अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने उपस्थिति दी।

–प्रतिभा सुराणा

कोटा

कोटा 6 मार्च। तीसरे दादागुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी की 686वीं स्वर्गारोहण तिथि पर कोटा में श्री जिनकुशलसूरि दादाबाडी दानबाडी में भक्ति भाव से गुरुदेव की पूजा की गई एवं गुरु इकतीसा का सामूहिक गाजे–बाजे के साथ पाठ किया गया। पूजा गाने का लाभ कुशल विचक्षण महिला मंडल, दादावाड़ी ने लिया। पूजा में ध्वजा चढाने का लाभ श्री मूलचन्दजी कमलजी भंसाली ने एवं आरती का लाभ श्री शान्तिकुमारजी अमितजी धारीवाल ने लिया। स्वधर्मीवात्सल्य के लाभार्थी श्री हुकमचंदजी–विमलादेवी, हेमंतजी, कमलजी, विपिनजी लोढा परिवार रहे।

ब्रह्मसर तीर्थ

ब्रह्मसर 6 मार्च। राजस्थान के विश्वविख्यात जैसलमेर समीपवर्ती ब्रह्मसर महातीर्थ पर चार सौ वर्षों से अधिक प्राचीन श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी ब्रह्मसर में जंगम युगप्रधान दादा श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी महाराजा की 686वीं पुण्यतिथि एवं मूलनायक श्री विमलनाथ भगवान एवं प्राचीन (मूल पादुका) दादावाड़ी एवं नूतन दादावाड़ी का सप्तम् वार्षिक ध्वजारोहण पर भव्य दो दिवसीय दादा कुशल गुरूदेव मेला खरतरगच्छाधिपति परम पूज्य आचार्य देव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी एवं श्री पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका, गच्छ गणिनी पद विभूषिता श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की विदुषी शिष्या साध्वीवर्या प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में 6 मार्च 2019 को संपन्न हुआ।

पुण्यतिथि के उपलक्ष में प्रातः भव्य वरघोड़ा, सुबह की नवकारसी, ध्वजारोहण, गुणानुवाद सभा, प्रवचन एवं अतिथि स्वागत से हुआ। दोपहर में दादा गुरुदेव की बड़ी पूजा एवं रात्रि को महाआरती एवं भक्ति भावना के कार्यक्रम आयोजित किये गये।

–महेन्द्रभाई बापना

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् ने मनाया
गच्छाधिपतिश्री का 59वां अवतरण दिवस

अखिल भारत 20 मार्च। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् द्वारा पूज्य गुरुदेव युवाहृदय सम्राट् गच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहब का 59वां अवतरण (जन्म) दिवस राष्ट्रीय स्तर पर अनुकंपा दिवस के रूप में मनाया गया। इस दिन को सभी शाखाओं ने गुरुदेव के बताये मार्ग पर चलकर मानव सेवा एवं जीवदया के कार्य किए। इस पुनीत अवसर पर युवा परिषद् की 60 से अधिक शाखाओं द्वारा समाज सेवा, मानव सेवा, जीवदया आदि विविध 60 से अधिक आयोजन कर युवाओं ने कीर्तिमान रच दिया। ''के-युप की एक आवाज... सभी शाखाएं एक साथ...'' के अंतर्गत यह पांचवां राष्ट्र स्तरीय आयोजन था, जो आशातीत सफल रहा।

इस अवसर पर गुरुवर ने फरमाया कि परमात्मा महावीर का कथन है कि जो रुग्ण, असहाय, अनाथ की सेवा करते हैं वे पुण्य कर्म का बंध करते हैं। इसे शिरोधार्य कर सभी ने अपने स्थानीय स्तर पर जनसेवा कर पूज्य गुरुदेव के अवतरण दिवस को वृहत् स्तर पर मनाकर श्रद्धा को अभिव्यक्ति दी। समर्पण के फूल गुरु चरणों में समर्पित किये। कहीं स्नात्रपूजा एवं सामायिक के द्वारा प्रभु भक्ति का आयोजन रखा। कहीं गोशाला में गायों को गुड़ व चारा दिया गया तो कहीं निस्सहाय लोगों को जरुरत की सामग्री दवाई, कपड़े जैसी जरुरत की वस्तुएं बांटी गईं, तो कहीं गरीबों व स्कूली बच्चों को किताबें एवं जरुरी राशन सामग्री प्रदान की गई, कहीं अनाथाश्रमों में अनाज, जीवनोपयोगी वस्तुऐं एवं खाद्य सामग्री भेंट की गई। पूरे देश में सेवा के कार्य करने के लिए एक-दूसरे से होड़ लग गई ।

जन्मोत्सव के आयोजन के पश्चात् सभी सदस्यों ने गुरुदेव को 59वें जन्मदिवस की बधाई सह शुभकामनाएँ प्रेषित कर परमात्मा से गुरुदेव के लिए चिरायु, उत्तम स्वास्थ्य, आरोग्यमय जीवन के लिए प्रार्थना की।

किसी को चिंता है आज की, किसी को चिंता है ताज की।

हमारे गुरुदेव मणिप्रभसूरिजी को, चिंता है पूरे संघ समाज की।।

संपूर्ण भारत भर की के-युप की शाखाओं ने आज के दिन को अपने-अपने क्षेत्र में समाज सेवा, जीवदया का कार्य करके अनुकंपा दिवस के रूप मनाया। साथ ही गुरुदेव के मुखारविन्द से उज्जैन में खरतरगच्छ युवा परिषद् उज्जैन शाखा के गठन की घोषणा की गई, इस अवसर पर उज्जैन में युवा परिषद् के अनेक केन्द्रीय पदाधिकारी गण गुरुदेव का आशीर्वाद लेने पहुँचे।

जन्मोत्सव के अवसर पर अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् एवं अखिल भारतीय महिला परिषद् की विभिन्न शाखाओं द्वारा किए गए विविध आयोजन की संक्षिप्त जानकारी

१. अंकलेश्वर शाखा–

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में गायों को घास, गुड़, पक्षियों को दाना आदि वितरण कर विविध जीवदयालक्षी आयोजन किए गए।

२. अक्कलकुआ शाखा–

अक्कलकुआ शाखा द्वारा पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में प्रातः ग्रामीण रुग्णालय में अल्पाहार (फल, बिस्किट, छाछ आदि) का वितरण किया गया। साथ ही बालिका आश्रम में अल्पाहार दिया गया।

अहमदाबाद के-युप शाखा

३. अजमेर ग्रामीण शाखा–

अजमेर ग्रामीण शाखा द्वारा पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में सरवाड गौशाला में गायों को घास चारा व गुड वितरित किया गया।

४. अजीमगंज (वेस्ट बंगाल) शाखा–

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में गौशाला में गायों को हरा चारा एवं गुड दिया गया।

इचलकरंजी के-युप शाखा

५. अहमदाबाद शाखा–

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में खरतरगच्छ युवा परिषद् एवं महिला परिषद् व बालिका परिषद् अहमदाबाद शाखा ने संयुक्त रूप से मानव गुलजार स्कुल बहेरामपुरा में बच्चों को किताबें तथा फुड पेकेट्स देकर सहर्ष गुरुवर के जयकारे के साथ उनका अवतरण दिवस सेवा दिवस के रूप में मनाया। गुलजार स्कूल में भोजन एवं शैक्षणिक सामग्री वितरण एवं विद्यार्थियों के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया।

६. अहिवारा शाखा–

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में गायों को गुड़, रोटी आदि का वितरण किया गया।

७. इचलकरंजी शाखा–

केयुप इचलकरंजी द्वारा नवचेतन अनाथाश्रम में अनाज, शक्कर, कपड़े, पढ़ाई एवं जीवनोपयोगी वस्तुएं पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में प्रदान की गयी। राष्ट्रीय सचिव रमेश लुंकड के नेतृत्व में शाखा के कई पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने आयोजन में हिस्सा लिया।

८. इन्दौर शाखा–

इंदौर शाखा के सदस्यों ने उज्जैन में पूज्य गुरुदेवश्रीजी के सानिध्य में उल्लास के साथ अवतरण दिवस मनाया।

९. ईरोड शाखा–

केयुप ईरोड शाखा एवं हेम कुशल महिला मंडल ईरोड द्वारा पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में गोशाला में गायों को गुड़ व चारा तथा अनाथ बच्चों को बिस्किट व फ्रूट वितरण का कार्यक्रम किया गया।

चैन्नई के-युप शाखा

१०. उज्जैन श्री संघ-

उज्जैन श्रीसंघ द्वारा गुरुदेव की निश्रा में अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में जन्मोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर उज्जैन श्रीसंघ द्वारा पूज्य गुरुदेव को 'अवन्ति तीर्थोद्धारक' के बिरुद से नवाजा गया। साथ ही युवा परिषद् की उज्जैन का गठन भी किया गया। जन्मोत्सव के उपलक्ष में नवगठित खरतरगच्छ युवा परिषद् उज्जैन द्वारा जीवनदीप वेलफेयर सोसायटी में फिजिओथेरेपी की मशीन जनसेवा हेतु भेंट की गई।

११. ऊटी (त.ना.) शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में केयुप ऊटी शाखा द्वारा दादावाड़ी में गुरुदेव इकतीसा का पाठ का आयोजन किया गया।

१२. कोट्टूरु शाखा-

कोट्टूरु के-यूप द्वारा वृद्धाश्रम एवं अनाथाश्रम में पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में फल व भोजन सामग्री वितरित की गयी।

१३. कोमाखान शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में श्री बाल कृष्ण सेवा केन्द्र बिहाचर अनाथाश्रम में 60 बच्चों को पेन और कॉपियाँ वितरण की गयी।

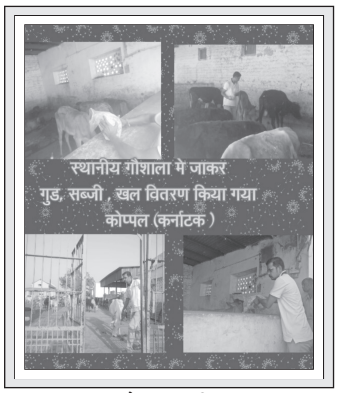

१४. कोयम्बटूर शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में मन्द बुद्धि बच्चों के स्कूल में फल फ्रूट्स वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

१५. खापर शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में केयुप खापर द्वारा ग्रामीण रुग्णालय में अल्पाहार (फल, बिस्किट, छाछ) आदि का वितरण किया गया। सुबह 10:30 बजे बालक आश्रम में अल्पाहार वितरण किया गया।

१६. खेतिया शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में गौशाला में चारा, खल एवं गुड वितरण किया गया।

१७. गोतागुडम (आन्ध्रप्रदेश) शाखा-

गोतागुडम शाखा द्वारा पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में हॉस्पिटल और अनाथाश्रम में फल फ्रूट्स वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

१८. चैन्नई शाखा-

खरतरगच्छ युवा परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश लूणिया के मार्गदर्शन में चैन्नई शाखा द्वारा पूज्य अवन्ति

तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में मानव सेवा के कार्यक्रम के तहत एस.आर.एस. सर्वोदय गर्ल्स हॉस्टल में 90 बालिकाओं को नाश्ता प्रदान किया गया।

१९. चौहटन शाखा–

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में स्थानीय गौशाला में हरा चारा एवं गुड का वितरण किया गया।

२०. जगदलपुर शाखा–

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में दादावाड़ी में गुरुदेव की बडी पूजा का आयोजन किया गया।

२१. जयपुर शाखा–

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में गौशाला में हरा चारा वितरण किया गया।

२२. जालोर शाखा–

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में जालोर शाखा की ओर से स्थानीय हॉस्पिटल में बिस्किट फ्रूट एवं गौशाला में गायों के लिए हरा चारा वितरित किया गया।

तिरुपुर के-युप शाखा

दिल्ली के-युप शाखा

२३. जैसलमेर शाखा–

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में तुलसी गौशाला मूलसागर में गायों को गुड व चारा दिया गया।

२४. जोधपुर शाखा–

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में गौशाला में गायों को हरा चार एवं गुड वितरण किया गया।

२५. तिरपातुर शाखा–

तिरपातुर केयुप सदस्यों एवं अनेक बालक-बालिकाओं ने पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में स्कूल में मिठाई वितरण किया गया।

२६. तिरुपूर शाखा–

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में सुबह मन्दिर दादावाडी में स्नात्र पूजा रखी गयी एवं दोपहर अनाथाश्रम में खाना दिया गया।

२७. दिल्ही शाखा–

इसी क्रम में पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में के-यूप व के.एम.पी. दिल्ली शाखा द्वारा असक्षम व निराश्रितों को सात्विक भोजन करवाया गया, जिसमें लंगर सेवादारों द्वारा भी अपनी सेवाएं दी गईं।

धोरीमन्ना के-युप शाखा

नीमच के-युप शाखा

कार्यक्रम इतना अभूतपूर्व था कि जिसने भी इसमें शिरकत की वो आगे भी इसी तरह के आयोजन करवाने के लिए उत्सुक दिखे।

२८. दुर्ग शाखा-

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् शाखा दुर्ग द्वारा पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में श्री शीतलनाथ जिनालय पद्मनाभपुर में स्नात्र पूजा की गयी। साथ ही राष्ट्रीय चेयरमेन सी.ए. श्री पदमजी बरडिया के मार्गदर्शन में दुर्ग शाखा ने इस अवसर पर दुर्ग के अध्यक्ष प्रवीण बोथरा, महामंत्री दीपक चोपड़ा, उपाध्यक्ष मयंक बोथरा, सदस्य यश बरडिया, आवेश दुग्गड़, अरुण लोढा सहित अनेक सदस्यों की उपस्थिति रही।वृद्धाश्रम में फलों एवं बिस्किट का वितरण किया गया। गुरुदेव के गुणों को याद करते हुए गुरुदेव के प्रति उनके असीम कृपा व स्नेह के प्रति सभी ने गुणानुवाद किया एवं हर्ष के साथ अवतरण दिवस मनाया।

२९. धुलिया शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में नेत्रहीन बच्चों को फल बिस्कुट आदि का वितरण किया गया।

३०. धोरीमन्ना शाखा-

के-युप धोरीमन्ना शाखा द्वारा पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में धोरीमन्ना स्थित श्री आलम गौशाला में 41 कार्टून गुड़ वितरण किया गया, उसके बाद आलम गोशाला के कार्यकर्ताओं द्वारा युवा परिषद के सदस्यों का प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम में केयुप धोरीमन्ना के अध्यक्ष- राजेंद्र सेठिया, सचिव- ललित संखलेचा, कोषाध्यक्ष- अरविंद छाजेड़, सह-कोषाध्यक्ष- हनुमान लालण, सलाहकार- अनिल सेठिया व बांकीदास बोथरा, नरेश लूणिया, भरत सेठिया, राजू बोथरा, ललित गांधी, राहुल बोथरा, नरपत बोथरा, दिनेश बोथरा, दिनेश लूणिया, महेश मालू, हनुमान सेठिया, भरत संखलेचा, साहिल सेठिया, अमूल डोशी, हितेश बोथरा व आलम गोशाला के कार्यकर्ता महेन्द्र राठी, राकेश सेठिया, गौतम माली, चतरसिंह चौहान आदि मौजूद थे।

३१. नवसारी शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में केयुप नवसारी शाखा की ओर से 550 दिव्यांग बच्चों को भोजन करवाया गया।

३२. नीमच शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में नीमच केयुप शाखा द्वारा सी.डब्ल्यु.एस.एन. छात्रवास के दिव्यांग बच्चों को अल्पाहार वितरण किया गया।

३३. फलौदी शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में गौशाला में गायों को लापसी गुड घास इत्यादि

का वितरण किया गया।

३४. बंगलुरु शाखा-

केयुप बंगलुरु शाखा द्वारा ऑक्सिलम नवजीवना चामराजपेट, बैंगलोर में पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में 100 से अधिक निराश्रित बच्चों को फल वितरित कर नाश्ता कराया गया। इस कार्यक्रम में परिषद् के कार्यकर्ताओं के साथ जिनदत्त-कुशल सूरि जैन सेवा मंडल के कई सदस्य उपस्थित थे। इस अवसर पर दादावाडी में सामूहिक इकतीसा पाठ का आयोजन किया गया।

बंगलुरु के-युप शाखा

३५. बाडमेर शाखा-

खरतरगच्छ युवा परिषद् व महिला परिषद् बाडमेर शाखा के तत्वावधान में पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में गोपाल गौशाला बाडमेर व वांकल गौशाला विशाला में गायों को गुड़ व चारा खिलाया गया। अंध मूक विद्यालय में 50 से अधिक बच्चों को भोजन करवाया। इस अवसर पर प्रकाश पारख, रमेश मालू, सम्पतराज अवतारी, राजू वडेरा, सुनील छाजेड़, भरत संखलेचा, भूरचंद सीयाणी, भरत छाजेड़, सरिता जैन, ममता बोथरा, मंजू बोथरा, उर्मिला धारीवाल, उषा सेठिया, परमेश्वरी मेहता, भावना संखलेचा, मांगीदेवी बोथरा, राजुल बोथरा, गुड्डी धारीवाल, नीतू जैन आदि युवा परिषद व महिला परिषद के कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम के बाद सभी ने गुरुदेव को 59वें जन्मदिवस की बधाई सह शुभकामनाएं प्रेषित की।

बाड़मेर के-युप शाखा

३६. बालोतरा शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में बालोतरा शाखा द्वारा स्थानीय गौशाला में गायों को गुड़ चारा आदि दिया गया। पक्षियों के लिए दाना व जल की व्यवस्था की गयी, साथ ही श्री शांतिनाथजी मंदिर में दादा गुरुदेव इकतीसा पाठ का आयोजन किया गया।

बालोतरा के-युप शाखा

३७. बिजयनगर शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में सरकारी अस्पताल में फल वितरण एवं वृद्धाश्रम में दोपहर का भोजन वितरण किया गया।

३८. बीकानेर शाखा-

खरतरगच्छ युवा परिषद् एवं महिला परिषद्, बालक व बालिका परिषद् द्वारा पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में झुग्गी झोंपडिय्यों में रह रहे गरीब बच्चों में फ्रूट जूस वितरण एवं लक्ष्मीनाथजी घाटी स्थित गौशाला में हरा चारा दिया गया।

ब्यावर के-युप शाखा

भादरेश के-युप शाखा

रायपुर के-युप शाखा

३९. बुढा शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में सरकारी अस्पताल में मरीजों को फल फ्रूट्स वितरण किया गया।

४०. ब्यावर शाखा-

खरतरगच्छ युवा परिषद शाखा ब्यावर द्वारा पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में दि. 19 मार्च को 11:30 बजे संजय इंक्लूसिव स्कूल ब्यावर में फलों व बिस्किट का वितरण किया गया। इस उपलक्ष में डॉक्टर आर. सी. सिंघवी साहब ने स्कूल को 11000 रूपये की राशि भेंट की।

४१. भादरेश शाखा-

भादरेश केयुप द्वारा पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में दिव्यांग स्कूल में फलों व बिस्कुट वितरण किया गया।

४२. मंदसौर शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में गोपाल कृष्ण गोशाला में गायों को गुड घास आदि का वितरण किया गया।

४३. मांडवला शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में स्थानीय गौशाला में गायों को हरा चारा एवं गुड दिया गया।

४४. मुंबई शाखा-

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद की मुंबई शाखा द्वारा पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में 11बजे दरिद्र नारायणों की सेवा करते हुए भोजन का वितरण किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष शांतिलाल मरडिया, सचिव मुकेश मरडिया, महेंद्र श्रीश्रीश्रीमाल, भावेश गाँधी, सोहनराज लूणिया सहित कई सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का लाभ श्री केवलजी प्रतापजी मरडिया परिवार ने लिया।

४५. राजनांदगांव महिला शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में राजनांदगांव शाखा की खरतरगच्छ महिला परिषद् द्वारा वृद्धाश्रम में भोजन आदि वितरण किया गया।

४६. रायपुर शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में खरतरगच्छ युवा परिषद्, रायपुर शाखा द्वारा

मेकाहारा हॉस्पिटल में फलों का वितरण किया गया। युवा परिषद् के सभी उत्साही कार्यकर्ताओं ने सबसे पहले गुरुदेव की जय-जयकार करते हुए उन्हें वंदन किया और फिर वार्डों में फलों का वितरण किया।

फल वितरण में श्री अध्यक्ष सुरेश भंसाली, श्री विजय मालू, श्री उपहार चोपड़ा, श्री गौरव कोटडिया, श्री आदित्य पारख, श्री विपिन श्रीश्रीमाल, सचिव श्री सचिन पारख सहित सभी सदस्यों ने भाग लिया।

मुंबई के-युप शाखा

४७. रिंगनोद शाखा-

केयुप शाखा द्वारा पूज्य गुरुदेवश्री के अवतरण दिवस की पूर्व संध्या पर आश्रम के छोटे बच्चों को खेल सामग्री वितरित की गयी।

शहादा के-युप शाखा

४८. वडोदरा शाखा-

केयुप वडोदरा शाखा द्वारा पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में मिठाई, फल, पॉपकोर्न आदि का वितरण 21 मार्च 2019 को किया गया।

४९. शहादा शाखा-

केयुप शहादा शाखा द्वारा श्री कुंजबिहारी प्रतिष्ठान ट्रस्ट शहादा संचालित गौशाला व आश्रम में पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में गौवंश को चारा खिला कर जीवदया की गयी।

५०. सांचोर शाखा-

सांचोर युवा परिषद् द्वारा पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में अस्पताल में बिस्किट फ्रूट एवं बेबी किट का वितरण किया गया। महावीर गोशाला में गुड़ व हरा चारा आदि दिया गया। युवा परिषद् के कार्यकर्ताओं द्वारा इस अवसर पर रक्तफदान भी किया गया।

५१. सिकन्द्राबाद (तेलंगाना) शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में गौशाला में गायों को हरा चारा एवं गुड वितरण किया गया।

५२. सूरत (पर्वत पाटिया) शाखा-

सूरत की केयुप पर्वत पाटिया शाखा द्वारा पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में जिन मंदिर में परमात्मा के स्नात्र महोत्सव का आयोजन किया गया। जिसका लाभ सैंकड़ों संघजनों सहित केयुप ने लिया।

५३. सूरत (पाल) शाखा-

सूरत पाल शाखा के युवा परिषद् के कार्यकर्ताओं द्वारा पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में चंचलबा गौशाला में गायों को हरा घास और गुड वितरण किया गया।

५४. सूरत शहर शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में गौशाला में गुड व घास वितरण किया गया।

हैद्राबाद के-युप शाखा

हॉस्पेट के-युप शाखा

५५. सेलम्बा शाखा-

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के 59वें अवतरण दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् सेलम्बा द्वारा सरकारी अस्पताल में मरीजों को फल और बिस्किट का वितरण एवं रात्रि 8 से 9 सामूहिक नवकार मंत्र जाप का आयोजन किया गया।

५६. हुब्बल्ली शाखा-

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में हुब्बल्ली शाखा द्वारा चिट्गुट्टी अस्पताल में भोजन एवं फलों वितरण किया गया।

५७. हैद्राबाद शाखा-

हैद्राबाद शाखा द्वारा पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के 59वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में कारवान दादावाडी स्थित वृद्धाश्रम में फल आदि का वितरण किया गया।

५८. हॉस्पेट (कर्नाटक) शाखा-

केयुप होस्पेट शाखा द्वारा गुरुदेव के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। गौशाला में गायों को हरा चारा, गुड दिया गया। सदस्यों द्वारा अनाथाश्रम में सेवा दी गयी। सरकारी हॉस्पिटल में दूध और फल वितरण किया गया। साथ ही झुग्गी झोंपडियों में नाश्ता वितरण कार्यक्रम भी रखा गया।

खरतरगच्छ के भाग्य जागे, जहां गुरुदेव का जन्म हुआ।
जिनशासन की शान बढ़ाने, आपश्री का अवतरण हुआ।
युवा वर्ग को प्रेरणा देकर, एक सूत्र में पिरो दिया।
एकता और सुशासन जो है, आपसे ही मुमकिन हुआ।

-धनपत कानुगो, राष्ट्रीय संयोजक (प्रचार-प्रसार)
अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद्

सेलंबा में खरतरगच्छ महिला परिषद् एवं ज्ञान वाटिका की स्थापना

सेलंबा 24 मार्च। खरतरगच्छ युवा परिषद् एवं महिला परिषद् के प्रेरक, मार्गदर्शक, सभी युवाओं को एक सशक्त मंच प्रदान करने वाले, खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा की प्रेरणा से प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. सा. की सुशिष्या साध्वीवर्या सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. की निश्रा में 24/3/19 को सेलम्बा (गुजरात) में खरतरगच्छ महिला परिषद् और ज्ञान वाटिका की स्थापना की गई।

जिसमें सर्व सम्मति से श्रीमती तुलसी जी पालरेचा को अध्यक्षा मनोनीत किया गया।

श्रद्धांजलि

श्री पुखराजजी चोपड़ा

उज्जैन 27 मार्च। निवासी अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ के प्रति पूर्ण समर्पित, संघ के स्तंभ श्री पुखराजजी चोपड़ा का हृदयगति बंद हो जाने से स्वर्गवास हो गया। श्री चोपड़ा की अकल्पित विदाई से उनके परिवार ने तो अपना शिरच्छत्र खोया ही है साथ ही मारवाड़ी समाज ने भी अपना कुशल नेतृत्व खो दिया है। अचानक हुए उनके स्वर्गवास को सुनकर पूरा जैन समाज, पूरा व्यापारी वर्ग हतप्रभ रह गया।

उनके स्वर्गवास पर अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. ने कहा- मेरा चोपड़ाजी से 1995 से संपर्क है। इस संपर्क में मैंने अनुभव किया कि वे कुशल वक्ता के साथ-साथ श्रद्धासंपन्न श्रावक थे। अवन्ति पार्श्वप्रभु के प्रति उनके रोम-रोम में आस्था थी। अवन्ति तीर्थ के जीर्णोद्धार में उन्होंने अपनी वक्तृत्व कला से प्रभुभक्तों को आकर्षित-प्रभावित करने में कोई कसर नहीं रखी।

अवन्ति तीर्थ के विकास के लिए जब भी जहाँ जाने की जरूरत पड़ी, वे अपने स्वास्थ्य को गौण करके भी गए।

यद्यपि अवन्ति तीर्थ की प्रतिष्ठा में स्वास्थ्य की प्रतिकूलता से उनकी उपस्थिति कम रही पर जुलूस एवं प्रतिष्ठा विधान आदि को देख-सुनकर उन्होंने अपनी आंखों और कानों को भरपूर धन्यवाद दिया। आज ऐसा लगता है कि उन्होंने अपने सपने को साकार करने के लिए ही यमराज से संघर्ष किया और विजयी रहे। अवन्ति तीर्थ की ऐतिहासिक प्रतिष्ठा का सपना उन्होंने साकार कर ही लिया।

पू. बहिन म. डॉ. साध्वी श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ने कहा- अवन्ति प्रतिष्ठा की तैयारी के दृष्टिकोण से सन् 2016 के मेरे चातुर्मास में प्रतिदिन प्रवचन में उपस्थिति उनके सत्संग प्रेम को दर्शाती है। अभी चार दिन पूर्व गुरुदेवश्री के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में चार दिवसीय कार्यक्रम में उपस्थिति से उनके स्वास्थ्य की चिंता समाप्त प्रायः हो गई थी। होली के दिन तो उन्होंने लगातार चार घंटे की उपस्थिति और साथ ही वही जोशभरा भाषण आज भी हमारे कानों में गूंज रहा है। श्रद्धा और कितना अपनत्व था उन्हें गुरुदेव के प्रति! निसंदेह हमने अपना एक विशिष्ट श्रावक खोया है। दिवगंत आत्मा क्रमशः परमात्मा की भक्ति करते हुए क्रमशः परमात्मा बने।

अवन्ति प्रभु उन्हें सद्गति प्रदान करें और अचानक पड़ी इस विपदा को सहन करने की परिवार को शक्ति प्राप्त

श्री हंसराजजी छाजेड़

बाड़मेर 5 फरवरी। मूल हरसाणी हाल बाड़मेर निवासी 60 वर्षीय श्री हंसराजजी पुत्र श्री रिखबचंदजी छाजेड़ का हृदयगति के अवरुद्ध होने से दि. 5 फरवरी 2019 को देहावसान हो गया।

स्वभाव से सरल, सज्जन, मितभाषी श्री हंसराजजी अपनी स्पष्टवादिता के लिए प्रसिद्ध थे। वे अपनी ईमानदारी के लिए भी जाने जाते थे। इसी ईमानदारी के चलते उन्हें अपने जीवन में संघर्ष स्वीकार था परंतु रग-रग में रमी ईमानदारी को छोड़ना कतई स्वीकार न था। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये है। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नर्मदादेवी अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् की राष्ट्रीय महामंत्री है।

श्रीमती नर्मदाजी पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. एवं विशेष रूप से बहिन म. के प्रति पूर्णसमर्पित है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजलि समर्पित है।

श्री अक्षयकुमार सेठिया

जिसने अभी-अभी अपने सपनों भरे जीवन का प्रारंभ ही किया था, अपनी परिश्रमशीलता न्याय-निष्ठा व्यवहार-कुशलता एवं व्यापारिक-दक्षता से अपनी पहचान बनाई थी, ऐसे अक्षयकुमार सेठिया का अचानक हार्टफेल से स्वर्गवास हो गया। केयुप पश्चिम राजस्थान के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमजी सेठिया के अनुज श्री मनोजजी सेठिया के सुपुत्र श्री अक्षयकुमार के स्वर्गवास ने परिवार एवं परिचित वर्ग में भूकंप की स्थिति पैदा कर दी है।

23 वर्षीय अक्षय कुमार की मृत्यु का समाचार ज्योंहि गुरुदेव गच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. ने सुना सहज ही उनके मुंह से निकला 'ओह...'। जीवन की नश्वरता का यह भयंकर नमूना है। व्यक्ति हजार वर्ष की कल्पना करता है पर भरोसा पल भर का भी नहीं है। क्रमिक मृत्यु को व्यक्ति आसानी से पचा लेता है पर इतनी अक्रम की मृत्यु व्यक्ति के लिए ऐसा जहर है जो हर पल परिजनों को मृत्यु का एहसास देता है।

पू. बहिन म. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ने कहा- अक्षय को गहरे परिचय के रूप में नहीं देखा पर उसकी परिवार निष्ठा एवं सहज स्वभाव के बारे में सुनकर हमें विश्वास था वह भी अपने बड़े लोगों की तरह जरूर संघ और गच्छ के विकास में सहयोग करेगा।

उसके बारे में ताऊ श्री पुरुषोत्तमजी एवं पिता श्री मनोजजी ने कहा- बहुत छोटी अवधि में उसने व्यापार के कामकाज से हमें निश्चिंत कर दिया था। हमें तो कुछ पता ही नहीं है। उसका मिष्ट एवं विनम्र स्वभाव पूरे परिवार में अनुमोदनीय था। आधुनिक काल की दुर्बलताएं उसमें कतई न थी। अल्पायु पाकर भी वह अपने परिजनों के हृदय में अमिट छाप अंकित कर गया।

दिवंगत आत्मा को सद्गति प्राप्त हो एवं परिवार को इस दुखद स्थिति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें ऐसी परमात्मा से प्रार्थना। जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करता है।

श्रीमती प्रीतिदेवी डागा

उज्जैन 25 मार्च। उज्जैन निवासी एवं अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ के सचिव श्री चन्द्रशेखरजी डागा के अनुज श्री अनिलजी डागा की धर्मपत्नी श्रीमती प्रीतिदेवी का ता. 25 मार्च 2019 को स्वर्गवास हो गया। वे परम धार्मिक सुश्राविका थी। लम्बे समय से व्याधिग्रस्त थी। जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

चौहटन-धोरीमन्ना-सांचोर में प्रवास

अवन्ति तीर्थोद्धारक पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. के शिष्य विपुल साहित्य सर्जक पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा., मुनिश्री विरक्तप्रभसागरजी म. विहार करते हुए चौहटन पधारे जहाँ उनका तेरह दिन का प्रवास रहा। प्रवचन के अतिरिक्त स्वाध्याय की तीन कक्षाएँ प्रतिदिन चली।

प्रवचन में स्वाध्याय की प्रेरणा, श्राविका कक्षा में विविध तार्किक वादों का विश्लेषण, बालकों की कक्षा में जीवन-आचरण की सीख एवं रात्रि कक्षा में जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। श्री जैन संघ चौहटन द्वारा खरतरगच्छ गौरव गाथा की खुली पुस्तक प्रतियोगिता का आयोजन भी चल रहा है जिसकी अन्तिम तारीख 25 अप्रेल 19 की रखी गयी है। प्रवास की अतीव विनंती होने पर भी धोरीमन्ना की तरफ विहार हुआ, वहाँ मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. ठाणा 2 का भी आना हुआ। प्रवचन में आशातीत उपस्थिति रही। मुमुक्षु विजय कोचर-नंदुरबार का बहुमान किया गया। बहुमान के अवसर पर मुनिश्री की प्रेरणा से सभी ने नियम स्वीकार किये। धोरीमन्ना संघ की भी बहुत विनंती रही पर समयाभाव में तीन प्रवचन ही हो पाये। वहाँ से विहार करके सांचोर-दादावाड़ी पधारे। तीन दिन प्रवचन का निर्मल वातावरण रहा। सभी की विनंती होने पर भी शंखेश्वर की तरफ विहार हुआ।

साधु साध्वी समाचार

卐 पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मनोज्ञसागरजी म. ठाणा 3 सूरत में विविध शासन-प्रभावक समारोहों में निश्रा प्रदान करते हुए पालीताना तीर्थ पधारे हैं। कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् राजस्थान की ओर विहार करेंगे।

卐 पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. होलिका चातुर्मास पश्चात् ता. 1 अप्रेल को पालीताना तीर्थ की ओर विहार किया है। जहाँ उनकी निश्रा में वर्षीतप पारणा एवं 30 मई को सिवाना-हैदराबाद निवासी कुमारी मनीषा छाजेड का दीक्षा समारोह संपन्न होगा।

卐 पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. उज्जैन से ता. 1 अप्रेल को भोपावर की ओर विहार करेंगे। वहाँ से बदनावर, रतलाम, मन्दसौर, नीमच, उदयपुर होते हुए जहाज मंदिर पधारेंगे।

卐 पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. विहार कर धोरीमन्ना होते हुए सांचोर पधारे हैं। वहाँ से अहमदाबाद, बडौदा होते हुए खान्देश नंदुरबार पधारेंगे।

卐 पूजनीया महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 उज्जैन में बिराजमान है। कुछ दिनों पूर्व उनकी शल्य चिकित्सा हुई थी। वे अभी स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

卐 पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा जयपुर बिराज रहे हैं।

卐 पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म. सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा उज्जैन नगर से पालीताना की ओर विहार किया है। पालीताना में उनकी शिष्या तपस्वी साध्वी प्रियस्नेहांजनाश्रीजी म. सा. के वर्षीतप का पारणा संपन्न होगा। उसके बाद गिरनार की ओर विहार करेंगे।

卐 पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा उज्जैन नगर से नंदुरबार की ओर विहार में है।

卐 पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा उज्जैन नगर मक्षी तीर्थ, इन्दौर होते हुए धूलिया की ओर विहार में हैं।

卐 पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा उज्जैन नगर से विहार कर मक्षी तीर्थ, घसोई तीर्थ, परासली तीर्थ होते हुए नागेश्वर तीर्थ पहुँचे हैं। वहाँ से भोपावर आदि तीर्थों की यात्रा के लिये विहार होगा।

卐 पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा उज्जैन से विहार कर इन्दौर, देवास होते हुए मक्षी तीर्थ पधारें हैं। वहाँ से शाजापुर पधारेंगे, जहाँ उनकी पावन निश्रा में नवपद ओली की आराधना होगी।

卐 पू. साध्वी श्री शासनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 2 ने उज्जैन से ता. 1 अप्रेल को पालीताना की ओर विहार किया है।

卐 पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा उज्जैन नगर में बिराज रहे हैं। यहाँ से इन्दौर पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में कन्या शिविर का आयोजन होगा।

卐 पू. साध्वी श्री मधुरिमाश्रीजी म. आदि ठाणा अहमदाबाद में अध्ययन हेतु बिराजमान है।

卐 पू. साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा खान्देश में विचरण कर रहे हैं। वे ता. 31 मार्च को अक्कलकुआं पहुँचेंगे।

卐 पू. साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा मुंबई बिराज रहे हैं। वहां से सूरत होते हुए गिरनार तीर्थ की ओर विहार होगा।

卐 पू. साध्वी श्री शुद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा तेन्नंपट्टू तीर्थ से विहारकर कृष्णगिरि होते हुए तिरपातुर पधारेंगे। वहां उनकी निश्रा में नवपदजी की ओली की आराधना होगी।

卐 पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 2 अहमदाबाद से विहार कर वडोदरा-सूरत की ओर विहार में हैं। उनकी निश्रा में जहां बालिकाओं का शिविर होगा।

卐 पू. साध्वी श्री कनकप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा उज्जैन से विहार कर इन्दौर होते हुए शाजापुर पधारे हैं। वहां से नागपुर की ओर विहार करेंगे।

पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री द्वारा घोषित चातुर्मास (वि.सं. 2076)

卐 पूज्य गच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. आदि ठाणा	धुलिया-महाराष्ट्र
卐 पू. मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी मनीषप्रभसागरजी म. आदि 3	सांचोर
卐 पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी मेहुलप्रभसागरजी म.	जैसलमेर
卐 पूज्य गणीवर्य श्री मणिरत्नसागरजी म. आदि	तिमनगढ़
卐 पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा	बीकानेर
卐 पूजनीया गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. आदि ठाणा	गिरनार तीर्थ
卐 पूजनीया गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा	फलोदी
卐 पूजनीया साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा	बेरला
卐 पूजनीया साध्वी श्री राजेशश्रीजी म. आदि ठाणा	कवर्धा
卐 पूजनीया साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. आदि ठाणा	चेन्नई (चूले)
卐 पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा	इचलकरंजी
卐 पूजनीया साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा	राजनांदगांव
卐 पूजनीया साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा	अहमदाबाद
卐 पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा	धुलिया
卐 पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा	मोकलसर
卐 पूजनीया साध्वी श्री हर्षपूर्णाश्रीजी म. आदि ठाणा	हैदराबाद
卐 पूजनीया साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा	तेजपुर आसाम
卐 पू. साध्वीश्री विनीतयशाश्रीजी म. अर्हंनिधिश्रीजी म. आदि ठाणा	धोरीमन्ना
卐 पूजनीया साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा	गांधीधाम
卐 पूजनीया साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा	जयपुर (मोतीडूंगरी दादावाडी)
卐 पू. साध्वी श्री प्रियंवदाश्रीजी शुद्धांजनाश्रीजी म. आदि	चेन्नई (धर्मनाथ मंदिर)
卐 पूजनीया साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा	बडौदा
卐 पूजनीया साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा	सूरत (पाल)
卐 पूजनीया साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म. आदि ठाणा	मुंबई (पायधुनी)
卐 पूजनीया साध्वी श्री डॉ. नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा	बंगलूरु
卐 पूजनीया साध्वी श्री संयमज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा	जयपुर (मालवीय नगर)
卐 पूजनीया साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा	चोहटन
卐 पूजनीया साध्वी श्री अभ्युदयाश्रीजी म. आदि ठाणा	उदयपुर
卐 पूजनीया साध्वी श्री विरलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा	मन्दसौर

शेष चातुर्मास यथानुकूलता घोषित किये जायेंगे।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

एक संत का पडाव जटाशंकर के झोंपडे में था। संत सरल स्वभावी थे। जटाशंकर की भक्ति से संत प्रमुदित थे। वहाँ से रवाना होते समय जटाशंकर को अपने पास बुलाया और कहा– मैं तुम्हें एक रत्न दे रहा हूँ। यह रत्न कोई सामान्य पत्थर का टुकडा नहीं है। अपितु पारसमणि है। लोहा ज्योंहि इसके स्पर्श में आता है, सोना बन जाता है। तूं बाजार से लोहा खरीद कर ला और सोना बना। मालामाल होजा। तेरी सारी दरिद्रता समाप्त!

पारसमणि पाकर जटाशंकर अतीव प्रसन्न हो गया। संत के प्रति अहोभाव से भर गया। दो वर्ष बाद उस संत का पुनः उस गाँव में आगमन हुआ। उसने सोचा था कि जटाशंकर ने झोंपडी के स्थान पर विशाल महल बना दिया होगा। परम सुख में जी रहा होगा।

संत उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ झोंपडी थी।

यह देखकर अचरज से भर गये कि झोंपडी वैसी ही थी। वे भीतर गये। जटाशंकर मिला। नमस्कार किया। प्रसन्नता छलक उठी।

संत ने सीधा सवाल किया– भाई! जिसके पास पारसमणि हो, उसकी संपन्नता की सीमा नहीं होती। तूं दरिद्र कैसे! क्या तूंने पारसमणि खो दी।

जटाशंकर ने कहा– नहीं! प्रभो! उसे तो मैंने जीव की भांति सम्हाल कर रखी है। यह देखो!

संत ने कहा– भाई! मैंने तुझे पारसमणि सम्हाल कर रखने के लिये नहीं दी थी। इसका उपयोग कर लोहे को सोना बनाने के लिये दी थी। तूंने अभी तक उपयोग क्यों नहीं किया!

जटाशंकर ने कहा– प्रभो! क्या करूँ! मैं रोज बाजार जाता हूँ। पर ये व्यापारी लोग लोहे का भाव बढा कर बताते हैं। भाव 20 रूपये किलो का है, वहाँ ये लोग 22 रूपये बोलते हैं। अब मैं ज्यादा कैसे दूं! रोज जाता हूँ। और इस कारण खाली हाथ आता हूँ। मैंने तय कर दिया कि दो रूपये ज्यादा हरगिज नहीं दूंगा। जब ये अपना भाव सही करेंगे, तभी लोहा खरीदूंगा।

संत यह बात सुनकर दर्द भरे अचरज से भर गये। केवल दो रूपये के लोभ के कारण तूं मूल्यवान् सोना बनाने से वंचित रह गया।

हमारी मानसिकता भी तो वैसी ही है। मात्र दो रूपये के कारण अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने से वंचित है। स्वार्थ, प्रमाद, आलस्य, आसक्ति, सुखशीलता, काल्पनिक सुख आदि के कारण अपनी आत्मा की भगवत्ता से वंचित है।

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य **श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.** आदि ठाणा का **धूले नगर** में चातुर्मास प्रवेश

वि.सं. 2076 आषाढ सुदि 10 गुरुवार ता. **11 जुलाई 2019** को प्रातः 8 बजे

धूले संपर्क - अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी नाहर - 94227 87210

परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

को

जन्म दिवस पर
हार्दिक अभिनंदन...
वर्धापना...

GOLECHA TELECOM LLP

PADRU - VIJAYWADA

वंदनकर्त्ता

शा. मोहनलालजी
हरकचन्दजी गोलेच्छा

श्रीमती पुष्पादेवी
मोहनलालजी गोलेच्छा

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

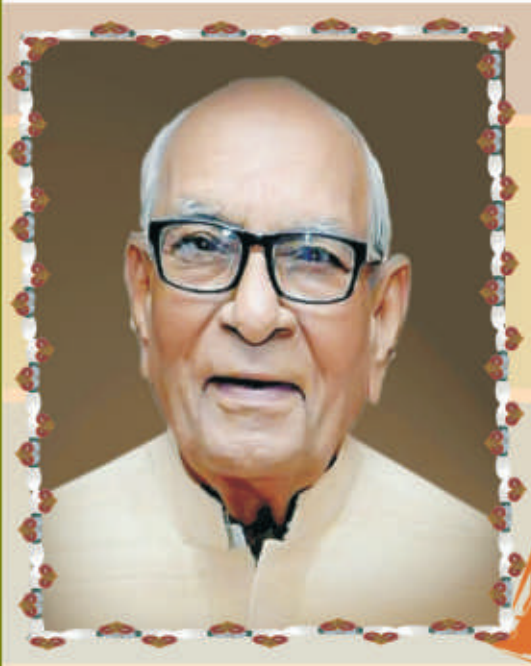

झाबक ट्रेक्टर्स
संकेत झाबक
मो. 93023-14042

झाबक इम्पलीमेंटस
संजोग झाबक
मो. 95757-93000

अलाईड ट्रेडर्स
संदीप झाबक
मो. 82250-50888

ओटोमोबाईल एवं ट्रैक्टर पार्ट्स के होलसेल एवं रिटेल विक्रेता

झाबक बाड़ा, कमासी पारा, तात्यापारा चौक के पास
रायपुर (छ.ग.) 492001

विनीत

मोतीलाल, गौतमचन्द, सम्पत लाल, कमलेश कुमार
संदीप, संजोग, संकेत एवं समस्त झाबक परिवार

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408